वर्ष 11 अंक-10 अगस्त 2017 ₹ 45

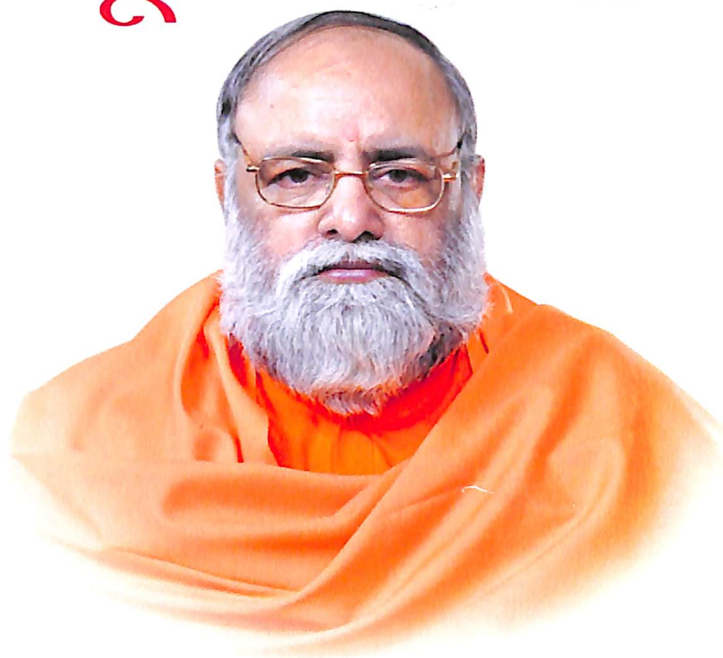
प्रभु कृपा

दुःख निवारण के अद्भुत रहस्य



भारत के सर्वोच्च महान राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी श्री रामनाथ कोविंद जी ने राजभवन, बिहार में किया सादर भावपूर्वक सद्गुरुदेव जी का हार्दिक स्वागत

प्रभु कृपा
दुख निवारण समागम
एवं
गुरु पूर्णिमा महोत्सव



15-16 जुलाई (सायं 4 बजे)

प्रभु कृपा महाशक्तिपीठ, जी.एल.ए. यूनिवर्सिटी के पास
चौमुंहा, वृंदावन, उ.प्र.

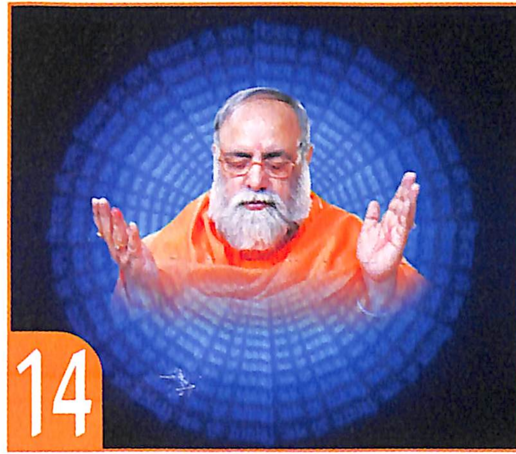
29-30 जुलाई (सायं 4 बजे)

नेक्सा शोरूम के पास, पीपलांवाला बाईपास
जालंधर रोड, होशियारपुर, पंजाब

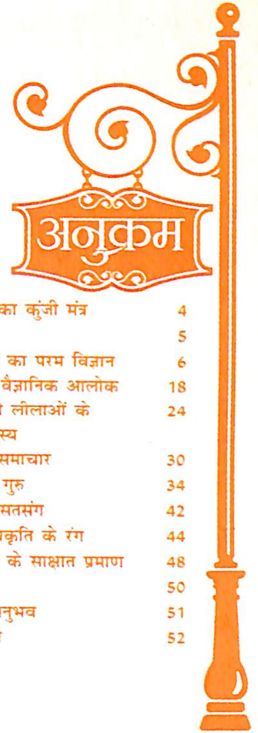
प्रभु कृपा

अगस्त 2017, वर्ष 11 अंक-10

प्रकाशक व मुद्रक - डा. जीवन ज्योति (अवैतनिक) भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम ट्रस्ट के स्वामित्व में 5/103, संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित तथा एम.पी. प्रिंटर्स बी-220, फेस-2, नोएडा-201305, गौतम बुद्ध नगर उ.प्र. से मुद्रित



बीज मंत्र और गुरु



प्रभु कृपा पत्रिका की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मांग बढ़ती जा रही है इसलिए कभी-कभी पाठकों को विलंब से पत्रिका मिलती है। यदि पाठकों को प्रभु कृपा पत्रिका मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा आ रही है तो वे तुरंत प्रसार विभाग को सूचित करें। पत्रिका से जुड़ी कोई भी विचार या सुझाव केवल इन नंबरों पर दें - 011-65063535, 65579319

E-mail : prabhukripapatrika@gmail.com

विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चैनलों में 'अद्भुत रहस्य' का प्रसारण

भारत में प्रसारण

सोनी टीवी - प्रतिदिन
प्रात: 5.00 से 6.00 तक

एपिक टीवी - प्रतिदिन
रात्रि 12.30 बजे से प्रात: 5.30 बजे तक

सब टीवी - प्रतिदिन
प्रात: 5.00 से 5.30 तक

दिशा टीवी - प्रतिदिन
प्रात: 7.45 बजे एवं रात्रि 11.00 बजे

श्रद्धा चैनल - प्रतिदिन
प्रात: 8 बजे एवं रात्रि 9.40 से 10.00 बजे तक

साधना टीवी - प्रतिदिन
प्रात: 6.20 बजे

अंतर्राष्ट्रीय प्रसारण

WORLD WIDE TELECAST IN SONY CHANNEL

USA	7:30 am To 8:00 am	Italy	8:30 am To 9:00 am	Japan	10:00 am To 10:30 am	Mauritius	9:30 am To 10:00 am
	(New York Timing)	Sweden	8:30 am To 9:00 am	Indonesia	10:00 am To 10:30 am	Keniya	8:30 am To 9:00 am
		Switzerland	8:30 am To 9:00 am	Malaysia	10:00 am To 10:30 am		
UK & EUROPE		Austria	8:30 am To 9:00 am	Thailand	9:00 am To 9:30 am	**MIDDLE EAST**	
UK (London)	7:30 am To 8:00 am	Greece	8:30 am To 9:00 am	Cambodia	9:00 am To 9:30 am	Abu Dhabi	7:30 am To 8:00 am
	(Monday to Saturday)	Norway	8:30 am To 9:00 am	Mangolia	9:00 am To 9:30 am	Ajman	7:30 am To 8:00 am
UK (London)	7:00 am To 7:30 am			Australia	12:00 pm To 12:30 pm	Fujairah	7:30 am To 8:00 am
	(Sunday)	**APAC (Monday to Sunday)**		New Zealand	2:00 pm To 2:30 pm	Sharjah	7:30 am To 8:00 am
France	8:30 am To 9:00 am	Singapore	8:00 am To 8:30 am			Dubai	7:30 am To 8:00 am
Germany	8:30 am To 9:00 am	Philippines	10:00 am To 10:30 am	**SOUTH AFRICA BEAM**		Ras Al-khaimah	7:30 am To 8:00 am
Spain	8:30 am To 9:00 am	Hong Kong	10:00 am To 10:30 am	South Africa	7:30 am To 8:00 am	Umm Al-quwain	7:30 am To 8:00 am

इंग्लैंड, यूरोप, अमेरिका व कनाडा में इंटरनेशनल प्रसारण

आज तक टीवी - यू.के. में प्रतिदिन प्रात: 8.00 बजे
आज तक टीवी - यूरोप में प्रतिदिन प्रात: 9.00 बजे

एमए टीवी - इंग्लैंड में प्रतिदिन प्रात: 8.30 बजे
एमए टीवी - यूरोप में प्रतिदिन प्रात: 9.30 बजे

टीवी एशिया (अमेरिका व कनाडा)
प्रतिदिन प्रात: 8.00 बजे (ईस्ट कोस्ट टाइमिंग)

प्रभु कृपा पत्रिका में वेदों-शास्त्रों, श्रीगुरुग्रंथ साहिब, कुरान-ए-पाक, जिनवाणी, धम्मपद, बाइबल के दिव्य वचन व इनकी कृपाओं के रहस्य होते हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि आप प्रभु कृपा पत्रिका को स्वच्छ हाथ से ही स्पर्श करें।

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम का टवीट्र व फेसबुक एकाउंट

https://www.facebook.com/ekaumguru

http://www.twitter.com/ekaumguru

यहां पर आप प्रतिदिन दुख निवारण कुंजी मंत्र प्राप्त कर पाएंगे

अगस्त माह के कुंजी मंत्र

दिव्य बीज मंत्र

ॐ गंग ऐंग श्रींग क्लींग नमः शिवाय

Aum Gang Aing Shreeng Kleeng Namha Shivaye

ਉਮ ਗੰਗ ਏਂਗ ਸ੍ਰੀਂਗ ਕਲੀਂਗ ਨਮਹਾ ਸ਼ਿਵਾਯ

श्रीदुर्गासप्तशती पाठ

ॐ ऐंग श्रींग ऐंग क्लींग नमः शिवाय

Aum Aing Shreeng Aing Kleeng Namha Shivaye

ਉਮ ਏਂਗ ਸ੍ਰੀਂਗ ਏਂਗ ਕਲੀਂਗ ਨਮਹਾ ਸ਼ਿਵਾਯ

भगवान शनिदेव का पाठ

ॐ ह्लींग ऐंग क्लींग शंग शनैश्चराय नमः

Aum Hreeng Aing Kleeng Shang Shanaishcharaye Namha

ਉਮ ਹ੍ਰੀਂਗ ਏਂਗ ਕਲੀਂਗ ਸ਼ੰਗ ਸ਼ਨੈਸ਼ਚਰਾਏ ਨਮਹਾ

मृतसंजीवनी कवचम्

ॐ ऐंग ह्लींग श्रींग ऐंग नमः शिवाय

Aum Aing Hreeng Shreeng Aing Namha Shivaye

ਉਮ ਏਂਗ ਹ੍ਰੀਂਗ ਸ਼੍ਰੀਂਗ ਏਂਗ ਨਮਹਾ ਸ਼ਿਵਾਯ

ब्रह्मांड रत्न

ॐ गंग ह्लींग ब्रह्मणे नमः

Aum Gang Hreeng Brahmne Namha

ਉਮ ਗੰਗ ਹ੍ਰੀਂਗ ਬ੍ਰਹਮਣੇ ਨਮਹਾ

श्री राधा-कृष्ण कवच

ॐ ऐंग ह्लींग राधाय नमः क्लींग कृष्णाय नमः

Aum Aing Hreeng Radhaye Namha Kleeng Krishnaye Namha

ਉਮ ਏਂਗ ਹ੍ਰੀਂਗ ਰਾਧਾਯ ਨਮਹਾ ਕਲੀਂਗ ਕ੍ਰਿਸ਼ਣਾਯ ਨਮਹਾ

संकटमोचक हनुमत पाठ

ॐ हंग ऐंग ह्लींग हंग हनुमते नमः

Aum Hang Aing Hreeng Hang Hanumate Namha

ਉਮ ਹੰਗ ਏਂਗ ਹ੍ਰੀਂਗ ਹੰਗ ਹਨੁਮਤੇ ਨਮਹਾ

मां दुर्गा की अभिमंत्रित मूर्ति

ॐ गंग ऐंग श्रींग दुंग दुर्गाय नमः

Aum Gang Aing Shreeng Dung Durgaye Namha

ਉਮ ਗੰਗ ਏਂਗ ਸ਼੍ਰੀਂਗ ਦੁੰਗ ਦੁਰਗਾਯ ਨਮਹਾ

भगवान गणपति की अभिमंत्रित मूर्ति

ॐ गंग ह्लींग महागणपते नमः

Aum Gang Hreeng Mahaganpate Namha

ਉਮ ਗੰਗ ਹ੍ਰੀਂਗ ਮਹਾਗਣਪਤੇ ਨਮਹਾ

मां गंगा की अभिमंत्रित मूर्ति

ॐ श्रींग गंग ऐंग श्री गंगाय नमः

Aum Shreeng Gang Aing Shree Gangaye Namha

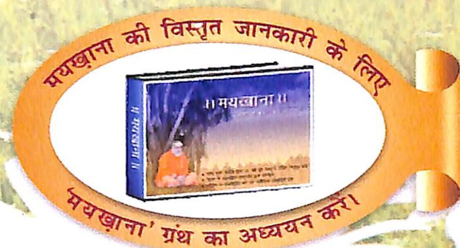
ਉਮ ਸ਼੍ਰੀਂਗ ਗੰਗ ਏਂਗ ਸ਼੍ਰੀ ਗੰਗਾਯ ਨਮਹਾ

मयख़ाना



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के
प्रभु कृपा ग्रंथ 'मयख़ाना' के अंश

भला हूं चाहे बुरा हूं साकी
पर हूं तेरा दीवाना।
प्राण-प्राण में डाले तुमने
भरकर खाली पैमाना।
यही हमारा जीवन है अब
यही हमारी जन्नत है,
स्वर्ग लोक भी ठुकरा देंगे
पाने को यह मयख़ाना।



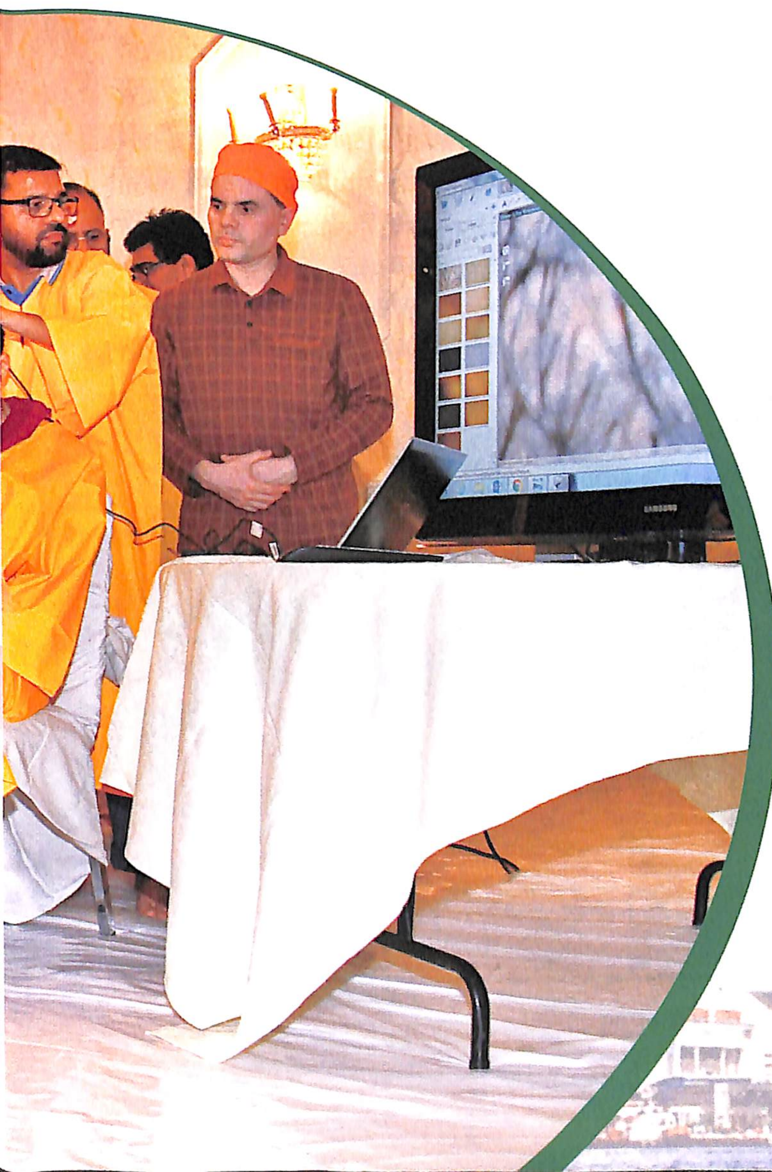
दुखों से मुक्ति का

केवल 5 मिनट में समाप्त हुए श



परम विज्ञान

ीर के घातक कीटाणु



पश्चिम के देश वर्ष भर में एक बार परम पूज्य सद्गुरुदेव जी का इंतजार इस प्रकार करते हैं जैसे कोई किसान बारिश की करता है अथवा चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र की बूंदों की करता है। अपनी जनकल्याण यात्रा के दौरान परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने प्रभु कृपा तो प्रदान की ही है बल्कि इसके साथ-साथ घातक बीमारियों के निवारण का अभियान भी शुरू किया। इस श्रृंखला में समागम में उपस्थित श्रद्धालुओं के शरीर के उन घातक कीटाणुओं की जांच की गई जो उनके गंभीर रोगों के कारण हैं। सबसे बड़ी बात यह रही कि वहां उपस्थित लगभग 90 प्रतिशत श्रद्धालुओं की जांच की गई। कुछ कम तो कुछ ज्यादा घातक कीटाणुओं से ग्रसित थे। समागम में प्रशिक्षित तकनीशियनों के द्वारा उच्च तकनीक की मशीनों से रोगियों के सिरों की जांच की गई जिसे बड़ी टीवी स्क्रीन पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता था। वहां उपस्थित मीडिया, राजनीतिक हस्तियां, वयापारी वर्ग व विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि इस शुद्ध वैज्ञानिक प्रयोग को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। जब उनके सिरों में बहुमूल्य औषधियुक्त अभिमंत्रित जल का प्रयोग किया गया तो केवल पांच मिनट में ही वे श्रद्धालु घातक कीटाणुओं से मुक्त हो गए।
समागम में ब्रैम्पटन नार्थ, टोरंटो की मेंबर ऑफ पार्लियामेंट सुश्री रूबी सहोटा ने प्रभु कृपा ग्रहण की और इस वैज्ञानिक प्रयोग की भूरि-भूरि सराहना की। कनाडा के विख्यात वॉयस रेडियो तथा वीकली वॉयस न्यूजपेपर, टोरंटो के चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर श्री ए. कुंद्रा व श्री रघुवीर चौहान की उपस्थिति भी यहां उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त भी वहां कई बुद्धिजीवी व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी इस प्रयोग को कौतूहल की दृष्टि से देखा और प्रशंसा की। परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने वहां उपस्थित श्रद्धालु भाई-बहनों के प्रश्नों व जिज्ञासाओं का निवारण करते हुए विशेष प्रभु कृपा नाम पाठ प्रदान कर कृतार्थ कर दिया।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने 27 जून 2017 को आयोजित प्रभु कृपा दुख निवारण समागम में संगत को संबोधित करते हुए कहा कि यहां दुख है, पीड़ा है, कष्ट हैं और समस्याएं हैं जिनका निदान ढूढ़ने के लिए हम सब यहां उपस्थित हुए हैं। संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसे कोई दुख न हो। ये दुख ग्रह-दोषों के कारण होते हैं। दोष कैसे खत्म हों इसके लिए पाठ करना जरूरी है। ये दोष पाठ से ही खत्म होते हैं। इन दोषों के कारण मृत्यु तक हो जाती है। बड़ी-बड़ी दुर्घटनाएं, असाध्य बीमारियां ग्रह-दोषों के कारण होती हैं। मांगलिक दोष यदि है तो वर-वधू का जीवन संभव नहीं होता। इस दोष के कारण एक पक्ष मृत्यु को प्राप्त हो जाता है या मृतप्राय हो जाता है। इसलिए



परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी से प्रभु कृपा ग्रहण करती हुई ब्रैम्पटन नार्थ की सांसद सुश्री रूबी सहोटा

जब कुंडली में सूक्ष्मातिसूक्ष्म दोष आ जाता है तो कोई भी शुभ कार्य तो छोड़िए जीवन ही दूभर हो जाता है। इसलिए जब पाठ कार्य न कर रहा हो तो कुंडली अवश्य अध्ययन करनी चाहिए और जो उसमें बाधा हो उसका निवारण ज्योतिष के हिसाब होना चाहिए, यह शास्त्रोक्त विधान है। जब पाठ में मन न लगे तब समझ लो कोई न कोई अनिष्ट घटना होने वाली है ऐसे में पाठ अनवरत रूप से करते रहें। यह भी ठीक है कि पाठ के द्वारा सब कुछ संभव है लेकिन विशेष परिस्थितियों में पाठ कुंडली के अध्ययन के आधार पर दिया जाता है। पाठ को श्रद्धा के साथ ही करना चाहिए इससे किसी का धर्म परिवर्तन नहीं होता। यदि किसी की कुंडली में कोई लाभ न होता हो तो भी जातक विशेष पाठ के द्वारा उसे प्राप्त कर सकता है। यहां मैं यह भी कहना चाहता हूं कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जो ज्योतिषी बताते हैं वह बिल्कुल ठीक होता है। जाने-अनजाने में हमसे कई ऐसे पाप या दुष्कर्म हो जाते हैं जो हमारी जिंदगी में बाधाएं बनकर आते हैं। ऐसे में हमें अपने पापों का प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए। जिस व्यक्ति को आपने कष्ट दिया है या उसकी हानि की है अथवा उसका हक मारा है, उससे अवश्य माफी मांग लेनी चाहिए और अपनी गलती को मान लेना चाहिए, यह भी प्रायश्चित करने का सर्वोत्तम उपाय है लेकिन पाठ के द्वारा



प्रभु कृपा ग्रहण करते हुए श्रद्धालुगण

वैज्ञानिक महाप्रयोग से अभिभूत हूं



अभी पूज्य गुरुजी श्रद्धेय स्वामी जी ने शरीर के घातक कीटाणुओं से मुक्ति का जो वैज्ञानिक प्रयोग दिखाया उसे देखकर मैं अभिभूत हूं, बहुत आश्चर्यचकित हूं कि क्या यह सत्य है? मैं स्वामी जी का कनाडा में स्वागत करती हूं और गर्व महसूस करती हूं। स्वामी जी कनाडा निवासियों को अच्छा मार्ग प्रदान कर रहे हैं और सबको एक बनाने का कार्य कर रहे हैं। मैं आशा करती हूं कि सब इसका पूरा लाभ उठाएंगे।

सुश्री रूबी सहोटा

मेंबर ऑफ पार्लियामेंट, ब्रैम्पटन नार्थ, टोरंटो

संपूर्ण रूप से यह दोष खत्म हो जाता है। पाठ से अकड़ और अहंकार समाप्त हो जाते हैं और विनम्रता आती है। यहां उपस्थित भाई-बहन यह अच्छी तरह जानते हैं कि वे किसी न किसी दुख से ग्रस्त हैं। न कोई पति सुखी है और न ही कोई पत्नी सुखी है।

पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि विज्ञान की खोज भौतिक है। जिसके मूल से सारा जगत बना है वह विज्ञान है, यह केवल ज्ञान है। वैज्ञानिकों ने मेडिकल साइंस के माध्यम से दवाओं का आविष्कार किया है जो रोग को समूल नष्ट नहीं कर पातीं हैं। जब एक बीमारी खत्म होती है तो उसके साइड इफेक्ट से दूसरा रोग शुरू हो जाता है। कई इस प्रकार के इंफेक्शन होते हैं जो कभी पूर्ण रूप से समाप्त नहीं होते। ये फंगल इंफेक्शन कैसे खत्म हो इस पर पूरी खोज की गई लेकिन वे इसका निदान खोजने में असफल रहे। आयुर्वेद में इनका इलाज संभव है। जिस प्रकार ये डैंड्रफ भी एक फंगल इंफेक्शन है, इसके बहुतायत से कान में मैल का रूप बन जाता है। मैल चाहे शरीर का हो या अंदर का इसे साफ करने की जरूरत होती है। हम अपने अंतर्मन को तो पवित्र विचारों व भावनाओं से साफ कर सकते हैं लेकिन बाहरी शरीर की सफाई भी बहुत आवश्यक होती है। सिर का फंगल यदि भोजन में गिर जाए तो भोजन विषाक्त होकर जानलेवा हो जाता है। यहां मंच पर जो प्रयोग किया गया उसका उद्देश्य डैंड्रफ जैसी भयंकर बीमारी जिसे आम भाषा में सिकरी भी कहते हैं, के दुष्प्रभावों को दिखाकर इसके निवारण का उपाय बताना है। यूं तो हजारों तरह के शैम्पू मार्किट में हैं जिनका दावा है कि इनसे डैंड्रफ खत्म हो जाते हैं लेकिन ऐसा है नहीं। डैंड्रफ को खत्म करने के लिए जो दवा व अभिमंत्रित जल का प्रयोग किया जाता है उसमें बहुमूल्य औषधि व सात समुद्र का जल भी होता है। आप यह जानकर हैरान होंगे कि वैज्ञानिकों ने प्रयोग करके यह निष्कर्ष निकाला है कि समुद्र के जल से कई तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है। भगवान धन्वंतरि भी समुद्रमंथन से ही प्रकट हुए थे। समुद्र के जल में रोगों से लड़ने के आश्चर्यजनक गुण होते हैं।



डैंड्रफ से कान में मैल बन जाता है जो श्रवणशक्ति को प्रभावित करता है। कान के पर्दों को हानि पहुंचाता है। इसका एक पौराणिक उदाहरण भगवान विष्णु से जुड़ा हुआ है कि एक बार उनके कान के मैल से मधु-कैटभ नाम के दो बलशाली असुर पैदा हो गए। वे उद्दण्ड होकर भगवान ब्रह्माजी को तंग करने लगे। भगवान ब्रह्मा जी ने भगवती महामाया की स्तुति की और जब वे प्रकट हो गई तब उन्होंने भगवान विष्णु की योगनिद्रा को भंग करने की प्रार्थना की। मां भगवती योगमाया ने ऐसा ही किया। जब भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागे तब भगवान ब्रह्मा की दयनीय स्थिति को देखकर मधु व कैटभ को ललकारा। भगवान विष्णु ने 5 हजार वर्षों तक उन दोनों के साथ बाहुयुद्ध किया लेकिन वे पराजित नहीं हुए। अंततः महामाया ने उन्हें भ्रमित किया और वे भगवान विष्णु से कहने लगे कि हम तुम्हारे युद्ध कौशल को देखकर प्रसन्न है, हमसे वर मांगो। भगवान विष्णु ने कहा कि मुझे यह वर दो कि तुम दोनों मेरे हाथों से मारे जाओ। ऐसा सुनकर वे बोले कि हमारा वध वहां

असली संत कौन, नकली संत कौन



जैसे नवरात्रों में व्रत रखते हैं, एक-एक दिन गिनते हैं कि राम नवमी हो। मुझे ऐसा लगा कि आज बहुत महान व पावन दिवस है। स्वामी जी ने कनाडा की धरती पर कदम रखकर इसे पवित्र कर दिया है। आज इनके दर्शन करके मेरा मन प्रसन्न हो गया है, मैं मंत्रमुग्ध हो गया हूं। पश्चिम के जो लोग समय के बहुत पाबंद हैं वे घंटों से यहां बैठे हैं और बड़े उत्साह में हैं कि आज उनके दुख दूर हो जाएंगे। जिस तरह मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा कि केवल कुछ मिनटों में ही शरीर के वो घातक कीटाणु जो कैंसर, स्किन रोग, फंगल इनफैक्शन, अर्थराइटिस, मानसिक रोग आदि का कारण थे, जिन्हें अत्याधुनिक जांच की बड़ी स्क्रीन पर मैंने देखा कि कुछ मिनटों में ही समाप्त हो गए। यह प्रयोग अमेरिका की अत्याधुनिक मशीनों के द्वारा अनेक डाक्टरों और हजारों लोगों के समक्ष हुए। आज विश्व में अनेक स्वामी तरह-तरह की दवाईयों के नाम पर करोड़ों का व्यापार कर रहे हैं लेकिन यहां ऐसा कुछ नहीं होता। स्वामी जी का असली मकसद निष्काम भाव से लोगों को उनके असाध्य कष्टों से मुक्ति दिलाना है। मैंने स्वयं अपनी आंखों से देखा कि समागम में अपने असाध्य कष्टों से लोगों को तत्क्षण मुक्ति मिल गई। यह बात आज के संदर्भ में बड़ी हैरान करने वाली है कि जहां सब कष्टों की मुक्ति के नाम पर धन इकट्ठा करने में लगें हैं, वहां स्वामी जी निष्काम होकर सबको कष्ट मुक्त कर रहे हैं। मैंने एक फिल्म देखी थी असली नकली। अब पता चला है कि असली संत कौन है और नकली संत कौन है।

श्री ए. कुंद्रा

चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर

वॉयस रेडियो, टोरंटो तथा वीकली वॉयस न्यूजपेपर

करो जहां जल न हो। उल्लेखनीय है कि वहां जल ही जल था पृथ्वी नहीं थी। भगवान विष्णु ने अपनी जंघाओं पर दोनों का सिर रखकर अपने सुदर्शनचक्र से काट दिया।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि प्रत्येक कार्य करने से पहले भगवती का स्मरण करना बहुत शुभ माना जाता है। यह भगवती संपूर्ण सृष्टि की नियंता है। दुर्गासप्तशती में इस विषय में वर्णन आता है-सारे मंत्रों के अधिष्ठाता भगवान शिव हैं और इनकी शक्ति शिवा अर्थात् मां जगदम्बिका है। ये पाठ मां जगदम्बा का है। जब सभी देवता देवी के समीप गए और पूछने लगे कि आप कौन हैं तब देवी मां ने कहा कि मैं ब्रह्मस्वरूप हूं। मुझसे सद्रूप व असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है। मैं आनंद और आनंदरूपा हूं। मैं विज्ञान व अविज्ञानरूपा हूं। अवश्य जानने योग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूं। पंचीकृत और अपंचीकृत महाभूत भी मैं ही हूं। यह सारा दृश्य-जगत् मैं ही हूं। वेद और अवेद भी मैं ही हूं। मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में संचार करती हूं। मैं आदित्यों और विश्वदेवों के रूपों में फिरा करती हूं। मैं मित्र और वरुण दोनों का, इन्द्र एवं अग्नि का और दोनों अश्विनी कुमारों का भरण-पोषण करती हूं। मैं सोम, त्वष्टा, पूषा और भग को धारण करती हूं। त्रैलोक्य को आक्रांत करने के लिए विस्तीर्ण पादक्षेप करने वाले विष्णु, ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूं।

ऐसी देवी मां की स्तुति करते हुए भगवान शंकराचार्य ने कहा कि मुख पर चन्द्रमा की शोभा धारण करने वाली मां, मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, संसार के वैभव की भी अभिलाषा नहीं है, न विज्ञान की अपेक्षा है, न सुख की आकांक्षा, अत: तुमसे मेरी यही याचना है कि मेरा जन्म मृडानी, रुद्राणी, शिव, शिव-भवानी'-इन नामों का जप करते हुए बीते। इस पाठ से सभी प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होते हैं और इतना ही नहीं साधक को हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है। दुर्गा सप्तशती में यह भी वर्णन है कि नकारात्मक शक्तियों को भी दूर भगा देता है यह प्रभु कृपा नाम पाठ। दुर्गासप्तशती में वर्णन है कि पाठ



करने वाले मनुष्य को देखते ही अनिष्टकारक देवता भी भाग जाते हैं। अंतरिक्ष में विचरने वाली अत्यंत बलवती भयानक डाकिनियां, ग्रह भूत, पिशाच, गंधर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि भी पाठ करने वाले का अहित नहीं कर सकते बल्कि इनसे दूर ही रहते हैं। इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने अभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा मंत्र-यंत्र होते हैं, वे सब इस पाठ को करने वाले मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं।

पाठ, विधिपूर्वक न करने से कार्य नहीं करता। बिना निष्कीलन व परिहार किए बिना कोई पाठ कार्य ही नहीं करेगा। जब तक आप पाठ नहीं करोगे तब तक इसका अनुभव नहीं हो सकता। आप सकाम भाव से पाठ करना शुरू करें और एक समय ऐसा आएगा कि यह निष्काम भाव में परिवर्तित हो जाएगा। आपको परमात्मा की अनुभूति होने लग जाएगी। जैसे ही पाठ बंद कर दोगे आप फिर से समस्याओं व दुखों से घिर जाओगे। पाठ से कई प्रकार की समस्याओं व कष्टों से बचे रहते हैं। पाठ से अहंकार खत्म होता है, विनम्रता आती है।

वैज्ञानिक गॉड पार्टिकल्स ढूंढ़ते हैं। जब वे परमात्मा को ही नहीं मानते तो उसके पार्टिकल्स कैसे हो सकते हैं। अल्लाह, ईश्वर, गॉड तो एक ही हैं इनके हिस्से नहीं हैं। वैज्ञानिक उसे नहीं मानते जो उनके यंत्रों से न देखा जाए। परमात्मा का कोई डीएनए नहीं है। वैज्ञानिकों ने बहुत खोज की है लेकिन उन्हें परमात्मा का डीएनए नहीं मिला। परमात्मा का डीएनए कैसे हो सकता है जबकि परमात्मा डीएनए बनाता है। जाति-जानवरों की होती है जैसे भैंस, गाय, बकरी आदि लेकिन मनुष्यों की कोई जाति नहीं होती। ये जाति व संप्रदाय मनुष्य ने स्वयं बनाए हैं। हर पशु-पक्षी और यहां तक कि चींटी की भी भाषा है। मनुष्य अपनी भाषा में लड़ता है तो ये भी अपनी भाषा में लड़ते हैं। फलों की नस्लें हैं लेकिन मनुष्य की नस्लें नहीं होती हैं। मनुष्य के आकार व अस्तित्व के विषय में किसी का कोई विरोध नहीं है। परमात्मा एक है, इस पर भी कोई विरोध नहीं लेकिन फिर भी मनुष्य धर्म व जाति के नाम पर एक दूसरे की गर्दन काटने के लिए तत्पर रहता है। परमात्मा की कोई जाति नहीं। जब पिता की कोई जाति नहीं तो मनुष्यों की जाति व धर्म कहां से आया? परमात्मा का कोई जन्मदिवस नहीं है। क्या किसी को शिव के माता-पिता के बारे में जानकारी है? इतनी असीम आकाशगंगा जिसमें असंख्य सूर्य, तारे, चन्द्रमा व पृथ्वी है, इसे बनाने वाला परमात्मा है। मां भगवती ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश की रचना की और इन्हें सृजन, पालन व संहार का कार्य दिया।

भगवान शिव ने मां भगवती की स्तुति करते हुए कहा है कि हे मां दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हो और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हो। दुख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि् आपके सिवा दूसरी कौन है, जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा ही दयार्द्र रहता हो। हे नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो। कल्याणदायिनी शिवा हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली शरणागतवत्सला हो, तीन नेत्रों वाली एवं गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है। शरण में आए हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवि! तुम्हें नमस्कार है। सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि! सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से प्रभु कृपा ग्रहण करती हुई श्रद्धालु बहनें

बहुमूल्य औषधियुक्त अभिमंत्रित जल का प्रयोग करके घा









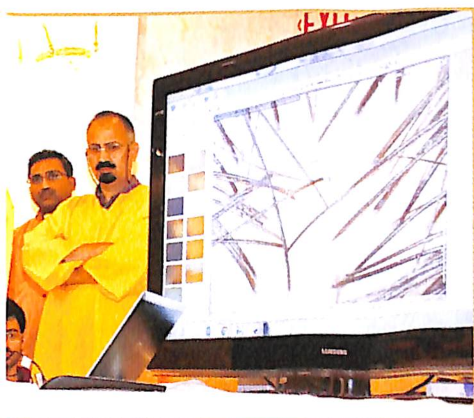
नमस्कार है। हे देवि! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गए हुए मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते हैं। सर्वेश्वरि! तुम इसी प्रकार तीनों लोगों की समस्त बाधाओं को शांत करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो।

यदि साधक अपना भला चाहता है तो बिना पाठ के कहीं भी एक कदम न चले। पाठ करके ही यात्रा करनी चाहिए। पाठ से सुरक्षित व्यक्ति जहां-जहां भी जाता है वहां-वहां उसे धन लाभ होता है तथा संपूर्ण कामनाओं की सिद्धि प्राप्त होती है। वह पुरुष पृथ्वी पर अतुलनीय महान ऐश्वर्य का भागी होता है। संपूर्ण सुरक्षित तथा निर्भय हो जाता है। वह तीनों लोकों में पूजनीय होता है। देवी का यह पाठ देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। जो प्रतिदिन नियमपूर्वक तीनों संध्याओं के समय श्रद्धा के साथ पाठ करता है उसे दैवी कला प्राप्त होती है। उसे कभी अकाल मृत्यु नहीं आती। मकरी, चेचक, कोढ़ आदि संपूर्ण व्याधियां नष्ट हो जाती हैं। कनेर, भांग, अफीम, धतूरे आदि का स्थावर विष, सांप और बिच्छू आदि के काटने से चढ़ा हुआ जंगम विष तथा अहिफेन और तेल का संयोग से बनने वाला कृत्रिम विष दूर हो जाते हैं और इनका कोई असर नहीं होता। पृथ्वी पर जितने भी मारण, मोहन, अभिचारिक प्रयोग होते हैं, यत्र, मंत्र, तंत्र होते हैं, इस पाठ को हृदय में धारण कर लेने से उस मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं। पाठ करने वाला पुरुष सुयश को प्राप्त होता है। जब तक वन, पर्वत और काननों सहित यह पृथ्वी टिकी रहती है तब तक उसके पुत्र-पौत्र आदि संतान परंपरा बनी रहती है और अंत में परमपद को प्राप्त होता है। स्त्रियों में जो भी सौभाग्य दिखाई देता है वह इस पाठ के द्वारा ही संभव है। अतः इस कल्याणमय पाठ का सदा जप करना चाहिए। भगवान शिव कहते हैं कि इस पाठ से ऐश्वर्य, सौभाग्य, आरोग्य, संपत्ति, शत्रुनाश तथा परममोक्ष की भी सिद्धि होती है। उन कल्याणमयी जगदंबा की स्तुति मनुष्य क्यों नहीं करते? अतः कीलन को जानकर उसका परिहार करके ही आरंभ करें। जो ऐसा नहीं करता उसका मनोरथ सिद्ध नहीं होता। कीलक और निष्कीलक ज्ञान प्राप्त करने पर ही पाठ संपूर्ण फल देता है। परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है कि मेरी परा व अपरा, दो प्रकार की शक्तियां हैं।

नक कीटाणुओं का निवारण करते हुए वैज्ञानिक व डॉक्टर









अपरा शक्ति में पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार आते हैं जो कि निकृष्ट प्रकृति है। ये जड़ है। यदि आप आकाश से कहो कि सिकुड़ जा तो वह नहीं सिकुड़ेगा। आप वायु से कहो कि ठहर जा तो नहीं ठहरेगी, इसी प्रकार जल व अग्नि भी आपका कहना नहीं मानने वाली। हां, यह सत्य है कि यदि आकाश मुट्ठी भर सिकुड़ जाए तो सारे ग्रह, उपग्रह, तारे, नक्षत्र आदि आपस में टकरा जाएंगे और महाप्रलय आ जाएगी। यदि पृथ्वी पर भूकम्प आ जाए तो बड़े-बड़े पहाड़, पेड़ गिर जाएंगे। इमारतें ढह जाएंगी, नदियां अपना रास्ता छोड़ देंगी और प्रलय हो जाएगी। इसी प्रकार यदि हवा लुप्त हो जाए तो सभी प्राणी दम घुटने से मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे। अग्नि के अति प्रदीप्त होने पर सब कुछ जलकर भस्म हो जाएगा। समुद्र में उथल-पुथल हो तो बड़े-बड़े समुद्री तूफान आ जाते हैं, जैसा कि पिछले दिनों में विश्व के कई देशों में आया था। हमारा मन भी अपने अनुसार ही चलता है। अहंकार का भी यही हाल है और बुद्धि भी अपने वश में नहीं है। इनको साधने के लिए केवल पाठ का ही आश्रय लेना पड़ता है। दूसरी तरह की प्रकृति परा है जो शाश्वत है, सदा है यह न अग्नि में जलती है, न हवा में सूखती है, न ही जल इसे गला सकता है। यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म और महान से महान है। यह चेतना है अत: अपरा शक्ति जो जड़ है, अचेतन है, परा उसका उपभोग करती है। गीता में भगवान कहते हैं कि इस परा को वेदों से नहीं जाना जा सकता है। भगवान ने कहा कि मैं वेद हूं। इसके बाद फिर अर्जुन को कहते हैं कि तू क्या पंडितों की तरह बात कर रहा है? यह तथ्य वेदों से नहीं जाना जा सकता है। इसके लिए किसी तत्ववेत्ता की शरण ग्रहण करके विनीत स्वर में करबद्ध याचना करो, तब वह तत्वज्ञानी, तत्व का ज्ञान देगा। यह तत्वज्ञान वेदातीत है।

समागम में भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के महासचिव व मंच संचालक श्री गुरुदास जी ने कहा कि परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी के तप से विश्व के करोड़ों भाई-बहनों को लाभ मिल रहा है। 50 करोड़ से अधिक भाई-बहन इस महाअमृत से, सरल व अद्‌भुत महापाठ के रहस्य से अपने कष्टों व दुखों से मुक्त हो रहे हैं। इसके वैज्ञानिक प्रमाण हैं, साक्ष्य हैं। अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड व यूरोप में अनेक सरकारों ने, भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अनेक मुख्यमंत्रियों ने मान्यता प्रदान की है इस महापाठ के महारहस्य को। □

गुरु पूर्णिमा
पर विशेष

बीज



मंत्र और गुरु

बिना गुरु के ज्ञान नहीं मिल सकता। 'गु' का अर्थ है अंधकार और 'रु' का अर्थ है प्रकाश। गुरु जीवन के अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाता है। बुद्धिमान व सौभाग्यशाली शिष्य गुरु जी की शरण में जाकर अपने अंत:करण के अंधकार को दूर करने के लिए गुरु कृपा रूपी दीपक प्रज्ज्वलित कर लेते हैं और अपने भविष्य को उज्ज्वल व सुनिश्चित करते हैं ताकि वे जीवन पथ में आने वाली सभी बाधाओं को पार कर सकें। यह प्रकाश, अमृत है। जब हम जीवन के संघर्षों से हार जाते हैं, हृदय हताश हो जाता है और आत्म विश्वास डोलने लगता है, भावनाएं मृतप्राय हो जाती है; जीवन की मधुरता समाप्त हो जाती है, मन में हीन भावनाएं जन्म ले लेती है, हम अपने को अपराध बोध से ग्रस्त मानने लगते हैं, तब यह अमृतमयी प्रकाश, जो गुरु का वास्तविक बल है, अक्षय है, नित्य है, हमें पुनर्जीवित कर देता है।

गुरु सूर्य का सारभूत तत्व है जो भौतिक शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी शाश्वत ज्ञान की रश्मियों से शिष्य के मन के अंधकार को दूर करता है। गुरु शरीर का नाम नहीं है, गुरु ज्ञान है जो अजन्मा है, शाश्वत है। सूर्य तो आज है, समाप्त भी हो जाएगा लेकिन गुरु ज्ञानरूपी सूर्य कभी समाप्त नहीं होगा। गुरु की कृपा से ही मंत्र साधना के द्वारा शिष्य व साधक अपने इच्छित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

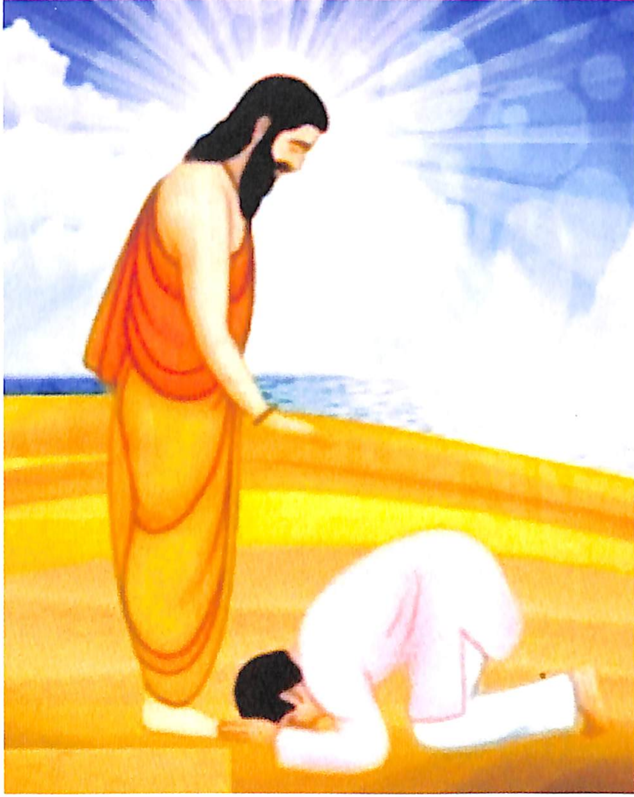
गुरु जब अपने मुख से शिष्य को मंत्र प्रदान करता है तो उस संस्कार को दीक्षा कहते हैं। भगवान शिव ने देवी पार्वती से कहा है कि बिना दीक्षा मनुष्य को मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। आज के इस कलियुग में जीवन को यदि साधना द्वारा उद्देश्यपूर्ण बनाना है तो दीक्षा संस्कार अर्थात गुरु के मुख से मंत्र प्राप्त करना अनिवार्य है। यूं तो पुस्तकों में मंत्र भरे पड़े हैं। कई प्रकार के ग्रंथों के भाष्य भी बाजारों में उपलब्ध हैं। रातोंरात सिद्धि प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य यदि ये चाहें कि उनको पुस्तकीय ज्ञान ही मंत्र सिद्धि प्राप्त करवा सकता है तो यह भयंकर भूल है। इससे उस मनुष्य को कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। शास्त्रों का कथन है कि दीक्षा विहीन व्यक्ति की पूजा अर्चना व उपासना कोई भी देवी-देवता स्वीकार नहीं करता। कभी-कभी तो साधक घोर विपत्तियों में भी घिर जाते हैं, जिसका निदान केवल गुरु की शरण है। गुरु, दीक्षा देने से पूर्व व्यक्ति की पात्रता की जांच परख भी करता है। यदि शिष्य में गुरु भक्ति न हो, गुरु के प्रति विश्वास न हो, ज्ञान को प्राप्त करने की चाहत न हो, तो वह सफल शिष्य नहीं बन सकता। कोई यह सोचे कि मैं केवल आध्यात्मिक चर्चाओं के द्वारा ही लाभांवित हो जाऊं, असंभव है। यदि सुपात्र शिष्य न हो तो

उसको प्रदान किया मंत्र ज्ञान भी व्यर्थ हो जाता है, जिस प्रकार भूमि में सही विधि से बीजारोपण नहीं करने से फसल पैदा नहीं होती है। गुरु के सामने ज्यादा बोलने से भी गुरु कभी ज्ञान प्रदान नहीं करता, प्रभु कृपा प्रदान नहीं करता क्योंकि प्रभु भी गुरु के माध्यम से ही कृपा प्रदान करते हैं। बिना किसी समर्थ गुरु से, साधक सफल साधना नहीं कर सकता। मंत्र तथा तंत्र साधना, गंभीर विषय है। मंत्रों को सिद्ध करना और उनसे लाभांवित होना, परिश्रमपूर्ण कार्य है और रहज भी है। एक बार यदि मंत्र सिद्ध हो जाए तो साधक सतत् लाभ प्राप्त करता है। सभी साधकों की ग्राह्य शक्ति एक समान नहीं होती, भिन्न होती है। सद्‌गुरु, शिष्य के पूर्वजन्मों में झांककर यह ज्ञात कर लेता है कि उसका शिष्य पूर्व जन्म में पशु योनि में था, मनुष्य योनि में था या देव योनि में था। क्योंकि इसी से उसकी क्षमता का निर्धारण संभव होता है। शिष्य के साधना के आधार को गुरु इसी आधार से परख कर दीक्षा प्रदान करता है। इसी आधार पर ही गुरु शिष्य को देने वाले मंत्र व देवता का निर्णय करता है। दीक्षा द्वारा गुरु और शिष्य एकात्म हो जाते हैं और शिष्य गुरु द्वारा मंत्र प्राप्त करके धन्य हो जाता है। जो शिष्य पूर्ण मन प्राण से गुरु को पुकारता है गुरु अवश्य प्रकट होते हैं। जो साधक सच्चे गुरु की खोज करता है उसे अवश्य ही सद्‌गुरु की प्राप्ति होती है।

गुरु तत्त्व का क्या है महत्त्व

भगवान शिव ने मां पार्वती को गुरु तत्व के विषय में विस्तारपूर्वक बताया है जो गुरुगीता नाम ग्रंथ में संग्रहित है। भगवान शिव ने कहा-'हे देवी, गुरु तत्व को जाने बिना कोई भी मनोरथ सिद्ध नहीं हो सकता। जो अपने गुरु की सेवा करता है उसका सारा कुल पवित्र होता है। गुरुदेव के तर्पण से ब्रह्मा आदि सब देवता तृप्त होते हैं। हे देवी, स्वरूप के ज्ञान के बिना जप-तप, मंत्र साधना सब कुछ न के बराबर हैं। गुरु तत्व के विमुख लोग वास्तविक ज्ञान को नहीं जानते, परम तत्व को नहीं और वे पशु के समान हैं। वेद और शास्त्रों के अनुसार विशेष रूप से गुरु की भक्ति करने से गुरु भक्त घोर पाप से भी मुक्त हो जाते हैं। गुरुदेव की कृपा से सब प्रकार के संशय कट जाते हैं और सर्व कर्म नष्ट हो जाते हैं। इसलिए कैवल्य की सिद्धि के लिए गुरु का ही भजन करना चाहिए। अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार, भाई, ये सब मृत्यु के अवसर पर कुछ काम नहीं आते, एकमात्र गुरुदेव ही उस समय तारणकर्ता है, इसलिए गुरुदेव का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। हे देवी, गुरु नाम के जप से अनेक जन्म-जन्मान्तर के एकत्रित हुए पाप भी नष्ट हो जाते हैं, इसमें अणुमात्र भी संशय नहीं है। गुरु का त्याग करने से मृत्यु होती है। मंत्र का जाप छोड़ने से दरिद्रता आती है और गुरु व मंत्र का त्याग करने से महानर्क मिलता है। भगवान शिव के क्रोध से गुरुदेव रक्षा करते हैं परन्तु सद्‌गुरुदेव रुष्ट हो जाएं तो बचाने वाला कोई नहीं है। गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए क्योंकि गुरु के माध्यम से ही भगवान किसी का उद्धार करते हैं। हे महेश्वरी, यह रहस्य अत्यंत गुप्त रहस्य है अत: पापी व्यक्तियों को नहीं मिलता। अनेक जन्मों के किए हुए पुण्यों से परिपूर्ण मनुष्य ही गुरु तत्व को प्राप्त कर सकता है। श्री सद्‌गुरु के चरणामृत का पान करने से और उसे मस्तक पर धारण करने से मनुष्य सभी तीर्थों में स्नान का फल प्राप्त करता है। अत: उसे तीर्थ में जाने की आवश्यकता नहीं होती है। सात





प्रकार के तीर्थों में स्नान करने से जितना फल प्राप्त होता है, उसका हजार गुणा फल श्री गुरुदेव के चरणामृत की एक बूंद से प्राप्त होता है। हे प्रिये, तर्क करने वाले, वेद को जानने वाले, ज्योतिष को जानने वाले एवं कर्मकांड को जानने वाले पंडित, विद्वान तथा लौकिक जन, निर्मल गुरु तत्व को नहीं जानते हैं। बिना सद्गुरु की कृपा से योगी और तपस्वी दोनों में से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता। गुरु की सेवा से देवता, गंधर्व, पितृ, यक्ष, चारण, ऋषि, सिद्ध आदि भी बहिर्मुख हो जाएं तो वे भी मुक्त नहीं होंगे। यहां ज्यादा कहने से क्या लाभ है सद्गुरु की परम कृपा के बिना करोड़ों शास्त्रों से भी मन में शांति मिलना बहुत दुर्लभ है। जो मनुष्य गुरु की निन्दा करता है वह जब तक सूर्य-चन्द्र का अस्तित्व रहता है तब तक घोर नरक में रहता है। श्री गुरुदेव के सामने ज्ञानवान शिष्य को कभी हुंकार शब्द नहीं बोलना चाहिए कि मैंने ऐसा काम किया और कभी असत्य नहीं बोलना चाहिए। जो गुरु के सामने सिर उठाकर बोलता है वह निर्जन भूमि में ब्रह्मराक्षस होता है। गुरुदेव के साथ रहने पर कभी किसी को उपदेश नहीं करना चाहिए। यदि कोई ऐसा करता है तो वह ब्रह्मराक्षस होता है। गुरु के आश्रम में अपना घर नहीं बनाना चाहिए, भोग और अन्य लीलाएं नहीं करनी चाहिए। दिन हो या रात हो सदैव गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। गुरुदेव की बात सच्ची हो या झूठी हो, कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। उनके साथ दास बनकर रहना चाहिए। जो वस्तु गुरुदेव न दी हो उसका कभी उपयोग नहीं करना चाहिए। गुरुदेव द्वारा दी हुई वस्तु को गरीब की तरह ग्रहण करा चाहिए। गुरुदेव द्वारा उपयोग में आने वाली वस्तुओं को कभी पैर से हीं छूना चाहिए। सद्गुरुदेव की निंदा करने वाले की जिह्वा काटकर दण्डित करना चाहिए। यदि ऐसा न कर सकें तो उसे उस स्थान से भगा दें अथवा वह स्थान छोड़ दें। हे देवी, गुरुदेव को ऊंचे सुसज्जित आसन पर बैठाकर रत्न, वस्त्र, आसन, वाहन, धूप, दीप आदि समर्पण करके पूजा करनी चाहिए।

गुरु द्वारा प्रदान किया हुआ मंत्र एक लहर है। मंत्र ऊर्जा का स्रोत है जो शक्ति संग्रहित करके साधक को हर प्रकार की अलौकिक आयाम प्रदान करता है। यही लहर, यही ऊर्जा और यही शक्ति साधक को इतना सक्षम बना देती है कि वह अपने अंत काल में प्राणवायु को दोनों भौहों के मध्य में स्थापित करके मुक्ति प्राप्त कर लेता है। इसका वर्णन भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के आठवें अध्याय में विस्तारपूर्वक किया है। मंत्र शक्ति योग द्वारा ध्यान अवस्था में संग्रहित की जाती है। यह शक्ति मनुष्य को इन्द्रियातीत बना देती है और साधक इनसे पार देखने में सक्षम हो जाता है। मंत्र केवल जुबानी उच्चारण के लिए ही नहीं होते हैं बल्कि इनको अपने शरीर में उपस्थित प्रत्येक नस में समा लेने की आवश्यकता होती है जिसकी प्रतिध्वनि को साधक प्रत्येक समय अनुभव कर सके। इस प्रकार से आपको पूरा अस्तित्व, आपका हर अंग उस मंत्र की ऊर्जा से प्रतिध्वनित होगा और आपको लगेगा कि यह मंत्र कोई बाहरी चीज नहीं है। आप महसूस करेंगे कि जो भी कुछ घट रहा है वह हमारे स्वयं का ही हिस्सा है कोई बाहरी वस्तु नहीं है। इस प्रकार आपकी प्राणवायु भी जो परा है, उसको भी आप मूर्तरूप में अनुभव कर पाएंगे और सतत् अभ्यास के परिणाम स्वरूप अंततः मुक्ति को भी प्राप्त कर पाएंगे। इसके लिए किसी तत्ववेत्ता गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु शब्द परमेश्वर के लिए ही उपयोग किया जाता है। या यूं कहिए कि गुरु के भीतर परमेश्वर की शक्ति है। यदि आप गुरु का नाम ले रहे हैं तो परमेश्वर का ही नाम ले रहे हैं। गुरु जो मार्ग दिखाते हैं उस पर चलकर शिष्य का कल्याण होता है। गुरु की निन्दा करने वाले को 84 लाख योनियों में भ्रमण करना पड़ता है। जिस प्रकार देवर्षि नारद को गुरु निंदा करने पर गुरु की ही शरण में जाना पड़ा था और गुरु ने ही उनको उद्धार का मार्ग बताया था। यदि सद्गुरुदेव प्रसन्न हो जाएं तो एक क्षण में ही नारायण के दर्शन हो जाते हैं। सभी मंत्र दिव्य शक्तियों से परिपूर्ण होते हैं लेकिन उन्हें प्रदान करने की विधि गुरु ही बताता है। इसलिए गुरु की शरण में ही शिष्य का कल्याण होता है। □

-संतोष कुमार

ओहायो
समागम

प्रभु कृपा का वैज्ञानिक आलोक

3 महीने में 23 लाख खर्च किए, कोई लाभ नहीं लेकिन अब 5 मिनट में मिली फंगल इंफैक्शन से मुक्ति

जॉर्जिया, अमेरिका के श्री रमन कुमार ने ओहायो में आयोजित समागम में बताया कि वे अपने फंगल इंफैक्शन के इलाज के लिए सभी जगह गए लेकिन कहीं समाधान नहीं मिला। न्यूयार्क के डाक्टरों की सलाह पर वे पिछले 3 महीनों से विशेष इंजेक्शन लगवा रहे हैं। जिसके लिए वे 36 हजार डॉलर (लगभग 23 लाख रुपए) खर्च कर चुके हैं लेकिन उनकी स्थिति में कोई अंतर नहीं आया। आज जांच की मशीनें बता रही हैं कि केवल 5 मिनट में मेरा फंगल इंफैक्शन जिसको डाक्टरों ने कैंसर का कारण बताया था, पूरी तरह समाप्त हो चुका है। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं है।





अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में अमेरिका की भूमि पर हुआ यह समागम अन्य समागमों से इसलिए अलग था कि इसमें परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा प्रतिपादित विभूति योग की महाकृपा के माध्यम से विशेष पाठ प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने अपनी इस जनकल्याण यात्रा के दौरान समागमों में विभूति योग के साथ-साथ मनुष्य शरीर के घातक सूक्ष्म कीटाणुओं के बारे में ज्ञान प्रदान करते हुए उनका तत्क्षण वैज्ञानिक निवारण भी प्रदान किया। समागम में पधारे हुए श्रद्धालु भाई-बहनों को जब यह ज्ञात हुआ कि उनके शरीर में ऐसे घातक सूक्ष्म फंगल हैं जो बड़ी-बड़ी असाध्य बीमारियों के कारण हैं तो वे आश्चर्य से भर गए। समागम में ही उच्च तकनीक यंत्र के द्वारा टीवी स्क्रीन व लैपटॉप पर स्पष्ट रूप से किया गया परीक्षण सबने अपनी खुली आंखों से देखा। समागम स्थल पर ही बहुमूल्य औषधि व मिश्रित अभिमंत्रित जल के प्रयोग द्वारा उन घातक फंगल व जीवाणुओं का निवारण किया गया। पीड़ित भाई-बहन यह जानकर बहुत ही प्रसन्न थे कि अब वे इन घातक जीवाणुओं से मुक्त हो गए हैं। इस समागम में अमेरिका से ही नहीं ब्रिटेन व कनाडा तथा अन्य देशों से भी आए हुए श्रद्धालुओं ने प्रभु कृपा ग्रहण की।



25 जून 2017 को आयोजित इस समागम में संगत को संबोधित करते हुए परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने कहा कि आज पूरे विश्व में दुख है, पीड़ा है, कष्ट है और समस्याएं हैं। कभी



प्रभु कृपा ग्रहण करतीं हुई श्रद्धालु बहनें

परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी प्रभु कृपा प्रदान करते हुए



धन प्राप्त हो जाता है तो तन ठीक नहीं होता और उस धन का भोग नहीं कर पाते। कभी तन ठीक है तो धन नहीं होता। धन को प्राप्त करने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं, भागते हैं लेकिन कुछ हाथ नहीं आता और यदि आ भी जाता है तो वह नाकाफी होता है। कभी तन व धन होता है तो मन ठीक नहीं होता। मन के कारण ही हर कार्य होता है। मन से ही हमारा अस्तित्व है, हमारा होनापन है। मन से ही हम गरीब, अमीर होते हैं और मन से ही हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि होते हैं। कभी दुख है तो कभी सुख। लेकिन स्थायी रूप से कोई सुख नहीं रहता। ऐसा कोई भी व्यक्ति इस संसार में नहीं है जिसे दुख न हो। लाखों डॉलर खर्च करने के बाद भी दुख दूर नहीं होते। धन से साधन तो मिल जाते हैं लेकिन सुख नहीं मिलता। बड़े-बड़े संसाधनों के होने के बावजूद भी व्यक्ति रातभर सो नहीं पाता। लजीज खाना सामने रखा हो लेकिन खा नहीं पाता। यह रहस्य ही हमें प्रेरित करता है कि हम इसका निवारण जानें। यह प्रभु कृपा नाम पाठ से ही संभव होता है जितने भी बड़े-बड़े प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति हैं वे सभी पाठ करते हैं। तपोराज, अर्थात् तप से राज



अध्यात्म के विज्ञान का रहस्य ग्रहण करते हुए श्रद्धालुगण

मिलता है। परमेश्वर को भूलने से ही दुख होते हैं। यह श्रीगुरुग्रंथ साहिब जी में वर्णित है कि सभी दुखों की औषधि प्रभु का नाम ही है।

परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने कहा कि अध्यात्म का अर्थ है आत्मा व परमात्मा का योग। यही योग आत्मा का परमात्मा से मिलन का माध्यम बनता है। विभूति योग के माध्यम से मनुष्य अपने सभी प्रकार के दुख, पीड़ा व कष्टों को भूल जाता है। उसे आत्म सुख प्राप्त होता है। आनंद ही वही परमानन्द की प्राप्ति होती है। लेकिन विज्ञान आत्मा व परमात्मा को नहीं मानता। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति प्रभु की कृपा से होती है। यदि तन ठीक न हो तो मन ठीक नहीं होता। जब तक हम तन, मन व धन की चिंताओं से मुक्त नहीं होते तब तक हम पूजा-पाठ व साधना की ओर अग्रसर भी नहीं हो पाते क्योंकि इस कलियुग की यही मांग है। जब मनुष्य धनवान हो जाता है तब उसमें अहंकार आ जाता है, विनम्रता खत्म हो जाती है। इसके दुष्प्रभाव के कारण आत्मिक सुख खत्म हो जाता है तथा भौतिक सुख भी अप्रिय हो जाते हैं। हमारे कौशल से सफलता तो मिल जाती है लेकिन सुख मिले या न मिले यह तय नहीं होता जबकि पाठ से निश्चित रूप से सुख की प्राप्ति होती है।

परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने कहा कि विज्ञान आत्मा को नहीं मानता। जो इनके माइक्रोस्कोप व उपकरणों में आ जाए उसी को ये मानते हैं। इनका कहना है कि जिसे हमने नहीं देखा वह है ही नहीं। इनके माइक्रोस्कोप में वह आत्मा व परमात्मा कैसे आ सकता है जो स्थूल नहीं है, अपरा नहीं है। भगवान ने गीता में कहा है कि मेरी अपरा व परा दो प्रकृतियां हैं। अपरा-पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार हैं जो जड़ हैं। परा प्रकृति के अंतर्गत आत्मा आती है जो 'नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि....न शोषयति मारुत:' है। जिसे न तो शस्त्र काट सकते हैं, न अग्नि जला सकता है न हवा सुखा सकती है और जिसका कोई आकार-प्रकार भी नहीं है, तब वह भला कैसे माइक्रोस्कोप द्वारा देखी जा सकती है। वह परब्रह्म अर्थात् परमात्मा जो शाश्वत है, सनातन है, अजन्मा है, एकोब्रह्म द्वितीयोनास्ति, एक ओंकार है, वह कैसे इन वैज्ञानिकों को दृश्यमान हो सकता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा भी है कि जो मुझे देवकी का पुत्र मानता है, वह अज्ञानी है। संसार में दो तरह की सोच है-एक तो निष्काम और दूसरी सकाम। पहली सोच वाले कहते हैं कि हमने कुछ भी नहीं किया है और जो कुछ किया परमात्मा ने किया है। विज्ञान को जानने के बाद अहंकार आ जाने पर उन्नति के बाद अवनति प्राप्त हो जाती है।

परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने कहा कि लोग अहंकारवश परमात्मा को भूल जाते हैं और अकड़ आ जाती है। जिसने हमें बनाया उसी को भूल जाने के कारण पतन होता है। पाठ करना भूल जाते हैं। जितना विज्ञान को जानते रहोगे उतना ही दुख और पीड़ा होगी। जैसे पाठ करोगे दुख भी दूर हो जाएंगे। हमारे ऋषि-मुनि वर्षों तक एक ही आसन में बैठकर बिना कुछ हरकत किए ध्यान किया करते थे। इसके परिणामस्वरूप उन्हें अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त हुआ। आज कोई भी मनुष्य इतनी आसानी से वर्षों तक की बात छोड़िए कुछ घंटों तक भी बिना हिले-डुले बैठ नहीं सकता। आप केवल कुछ मिनट तक बैठकर ही पाठ कर लेंगे तो कल्याण हो जाएगा। आपको किसी तत्ववेत्ता गुरु की शरण में जाना ही होगा। आप उसकी आज्ञा का पालन करेंगे और उसके वचनों को ग्रहण करके कर्म करेंगे, तब ही आपकी मनोकामना पूर्ण हो सकती है। गुरु भी आपको प्रभु कृपा प्रदान करने के लिए बाध्य हो जाएगा। लेकिन इससे पहले



वह आपके कर्तापन भाव को तोड़ेगा। जो सद्गुरु को समर्पित हो जाएगा वही प्रभु कृपा का भागी बनेगा। सद्गुरु आपको जो पाठ देगा उससे यह संभव होगा। भगवान शिव का कथन है कि इस पाठ से बढ़कर न कोई था, न है और न ही कोई होगा।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि नकारात्मक शक्तियों को भी दूर भगा देता है यह प्रभु कृपा नाम पाठ। दुर्गासप्तशती में वर्णन है कि पाठ करने वाले मनुष्य को देखते ही अनिष्टकारक देवता भी भाग जाते हैं। अंतरिक्ष में विचरने वाली अत्यंत बलवती भयानक डाकिनियां, ग्रह भूत, पिशाच, गंधर्व, राक्षस, ब्रह्मराक्षस, बेताल, कूष्माण्ड और भैरव आदि भी पाठ करने वाले का अहित नहीं कर सकते बल्कि इनसे दूर ही रहते हैं। इस पृथ्वी पर मारण-मोहन आदि जितने अभिचारिक प्रयोग होते हैं तथा मंत्र-यंत्र होते हैं, वे सब इस पाठ को करने वाले मनुष्य को देखते ही नष्ट हो जाते हैं।

समस्त ब्रह्माण्ड की स्वामिनी मां जगदम्बा है। मां भगवती का यह पाठ सब प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। जब देवताओं ने मां जगदम्बा से पूछा कि हे देवि, तुम कौन हो तो मां ने कहा कि मैं ब्रह्मस्वरूपा हूं। मैंने ही इस जगत को उत्पन्न किया है। मैं अजा-अनजा, विज्ञान-अविज्ञान, वेद व अवेद हूं। मैं ऊपर-नीचे, अगल-बगल सारे स्थानों पर हूं। मैंने ही सोम त्वष्टा व पूषा तथा भग को धारण किया है। मैं ही इन्द्र व अश्विनी कुमारों का भरण-पोषण करती हूं। मैंने ही ब्रह्मा-विष्णु व महेश को धारण किया हुआ है। यह मंत्र पाठ जो मैं आपको दे रहा हूं, इसका तब ही लाभ होता है कि जब यह निष्कीलन करके किया जाए। विज्ञान ने भौतिक सुख-साधन दिए हैं लेकिन उसके साथ दुख भी दिए हैं। यह विज्ञान वास्तव में ज्ञान है। विज्ञान केवल अध्यात्म है। अध्यात्म के विज्ञान का ही यह ज्ञान एक हिस्सा है। विज्ञान की खोजों ने ऐसे विस्फोटक भी बनाए हैं जो पूरे विश्व का विनाश कई बार करने में सक्षम हैं। कोई अपने शत्रु का भला नहीं चाहता। हमारी सनातन संस्कृति की विचारधारा है कि हमारा शत्रु भी सुखी रहे। ऐसा ज्ञान कहां मिलता है-इस विषय में गीता में कथन है कि किसी तत्ववेत्ता गुरु की शरण में जाने से ही ज्ञान मिलता है। प्रवचन व कथा से कभी ज्ञान नहीं मिलता, आप कथा व प्रवचन सुनकर कुछ समय के लिए आनंदित हो सकते हो लेकिन स्थायी रूप से आनंद प्राप्त नहीं हो सकता। क्योंकि थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल की भी बहुत आवश्यकता होती है। वाचा और कर्मणा में बहुत अंतर होता है। जो सुनने में बहुत सुन्दर लगता हो वह जरूरी नहीं है कि करने से इतना ही सुन्दर लगे। व्यवहारिक ज्ञान को प्राप्त करने के लिए किसी सद्गुरु की शरण में जाने की आवश्यकता होती है। मैं स्वयं भी इस पाठ को नहीं मानता था लेकिन जब ग्रहण करके जप किया तो इसके प्रभाव को जाना। आज विश्व भर के 50 करोड़ से अधिक भाई-बहन इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

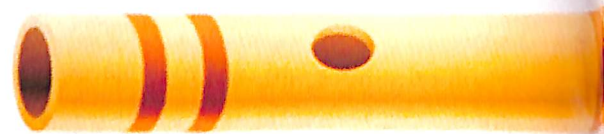
भगवान ने गीता में कहा है कि मेरी परा व अपरा दो प्रकृतियां हैं। परा-आत्मा है और अपरा आठ हैं-पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि व अहंकार जो, जड़ हैं। इन दोनों प्रकृतियों के समन्वय से जीवन चलता है लेकिन अपरा प्रकृति को ही कई परमात्मा मानकर पूजने लगते हैं। पृथ्वी आपके कहने से गतिमान नहीं होगी। वायु आपका कहना मानकर मंद या तेज नहीं होगी। आकाश भी आपका कहना मानकर सिकुड़ने नहीं लगेगा। इसी प्रकार अग्नि का कार्य ताप देना है जो वह नहीं छोड़ेगी। समुद्र का जल भी अपने अनुसार ही ऊपर-नीचे होता है, लहरें आती हैं जाती हैं। इसी प्रकार मन, बुद्धि, अहंकार भी जड़ प्रकृति की श्रेणी में आती हैं। ये नित्कृष्ट प्रकृति है। अध्यात्म परा प्रकृति का रूप है। आप इन दो प्रकृतियों को ही समझ लो तो आपको कुछ भी जानने की जरूरत नहीं है। सभी तीर्थों का फल आपको यहीं स्वत: ही मिल जाएगा।

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के महासचिव व मंच संचालक श्री गुरुदास जी ने कहा कि अमेरिका की इस भूमि पर आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है कि परम पूज्य सद्गुरुदेव जी अपनी महातपस्या व साधना का महाप्रसाद हमें प्रदान कर रहे हैं। पूरे अमेरिका से भाई-बहन जो इस समागम में आए हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं। आप सभी जानते ही हैं कि इस महाआलोक से विश्व भर के करोड़ों भाई-बहन तन, मन व धन की समस्याओं से मुक्ति पा गए हैं। यह महासमागम अति दुर्लभ अवसर है कि जब परम पूज्य सद्गुरुदेव जी हमें विशेष कृपा प्रदान कर रहे हैं, यह हमारा परम सौभाग्य है। □

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
पर विशेष



बाल कृ
व्य





जय कन्हैया लाल की
हाथी घोड़ा पाल की
जय हो नन्दलाल की
गोकुल के गोपाल की



ष्ण की लीलाओं के
व्यहारिक रहस्य



श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर नाचती गाती भक्तों की टोलियों का उत्साह देखते ही बनता है। भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण दिवस भादों मास के कृष्ण अष्टमी के दिन संपूर्ण भारत श्रीकृष्णमय हो जाता है। इस दिन पूरे मंदिरों को सुरुचिपूर्ण तरीके से सजाया जाता है। हर गली मोहल्ले में झांकियों का आयोजन किया जाता है। चारों तरफ श्रीकृष्ण नाम की धुन गुंजायमान हो जाती है-**श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेवा।** कहीं श्रीकृष्ण नाम का संकीर्तन हो रहा है तो कहीं कृष्णावतार नाटक हो रहा है। कहीं मटकीफोड़ प्रतियोगिता हो रही है। महाराष्ट्र में क्षेत्रीय तौर पर छोटी और बड़ी मटकीफोड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और वातावरण में-**गोविन्दा आला रे आला** की स्वर लहरी मन को आह्लादित करती रहती है। दिन भर की पूजा पाठ और व्रत की प्रक्रियाओं और अर्धरात्रि को भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के पश्चात प्रसाद ग्रहण करने के बाद इस पावन पर्व को विश्राम दिया जाता है।



माखनचोरी की लीला



माखनचोरी की लीला का यदि साधारण सा अर्थ लगाया जाए तो यही होगा कि भगवान श्रीकृष्ण माखन खाने के लिए चोरी किया करते थे और पकड़े भी जाते थे। माखनचोरी में उनके ग्वाल बाल सखा भी साथ होते थे। यह कहना कि उनके घर में माखन की कोई कमी थी, झूठ है क्योंकि नन्द बाबा के पास हजारों गऊएं थीं। माखन चोरी के साथ-साथ छाछ और दूध से भरी मटकियों को कंकड़ मारकर तोड़ देना भी अस्वाभाविक सा लगता है। ऐसा क्यों करते थे भगवान श्रीकृष्ण? इसका व्यवहारिक पहलू यह है कि भगवान श्रीकृष्ण चाहते थे कि उनकी गऊओं से उत्पादित होने वाला दूध व छाछ बाहर न जाए। ये चाहते थे कि सर्व प्रथम वृंदावन में इनकी पूर्ति हो और बच जाने पर ही बाहर बिक्री के लिए जाए। उनकी यह इच्छा थी कि घी, दूध व छाछ का प्रयोग करके ग्वाल बाल और वंदावन निवासी हृष्ट-पुष्ट हो जाएं। इसी कारण वे उन गोपियों और गोपों का विरोध करते थे। जो दूधा और माखन मथुरा बेचने के लिए जाते थे इस विरोध का प्रदर्शन वे उनके मिट्टी से बने बर्तनों को तोड़कर किया करते थे। इस काम में उनके बाल सखा भी साथ देते थे। अंतत: वे इस बात को वृंदावनवासियों को समझाने में सफल भी हुए। आज के परिवेश में यह व्यवहारिक संदेश है कि हमें सबसे पहले अपने देश में पूर्ति करनी चाहिए और बाद में निर्यात करना चाहिए। हमारी वर्तमान पीढ़ी को दूध, दही की अत्यंत आवश्यकता है लेकिन दूध, दही की बजाए बर्गर, पिज्जा व जंक फूड का बोलबाला है। ये खानपान हमारे स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है।

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का श्रवण, पठन व पाठन करना हिन्दू धर्मावलंबियों के लिए पुण्य कार्य कहलाता है। भगवान श्रीकृष्ण का चरित्र जहां आध्यात्मिक है वहां उच्च कोटि के कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ व समाज सुधारक और योगीराज का प्रारूप भी है। इनकी लीलाओं में परमात्मा तत्व तो है ही साथ ही जनमानस को उनके कर्तव्यों का बोध कराने वाले संदेश भी निहित हैं। केवल श्रद्धा व भक्ति भाव से कृष्ण नाम का स्मरण करना ही कृष्ण भक्ति नहीं है वरन इनके द्वारा दिए गए कल्याणकारी संदेशों को ग्रहण करके सद्मार्ग पर चलना भी आवश्यक है। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में कई महान संदेश और व्यवहारिक तथ्य मौजूद हैं जिन्हें चिंतन व मनन के द्वारा ग्रहण करने की आवश्यकता है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने समागमों में कई बार यह कहा है कि कुरुक्षेत्र में हुए महाविनाशकारी युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से जो कहा है वह पूरी तरह किसी को पता नहीं है। भगवान वेद व्यास ने जो बोला और जो भगवान गणेश ने लिख दिया, वही श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में हमें प्राप्त हुआ है। धार्मिक ग्रंथ की भाषा संस्कृत है। क्या जरूरी है कि भगवान श्रीकृष्ण ने जो कुछ बोला वह देववाणी संस्कृत में ही बोला था। यह भी क्या जरूरी है कि उन्होंने उतना ही बोला था जो गीता में लिखा हुआ है। हर देश, काल, परिस्थितियों में जो राजा और शक्ति सम्पन्न हुआ है, उसने धार्मिक व सामाजिक इतिहास को अपनी तरह से ही लिखवाया है। गीता में लिखा हुआ ज्ञान भी भगवान वेद व्यास के अनुसार है। उस समय कुछ ऐसा भी घटित हुआ था या कहा गया था जो इसमें नहीं लिखा गया है। यह जानने के लिए 'ध्यान' में जाना होगा जो पाठ व तपश्चर्या के फलस्वरूप संभव होता है। नेत्रहीन महाराज धृतराष्ट्र को संजय ने महाभारत का जो आंखों देखा हाल सुनाया था वह 'ध्यान' के द्वारा ही संभव हुआ था। इसे 'दिव्य-नेत्र' की संज्ञा दी गई है लेकिन इसका व्यवहारिक पहलू दूरदर्शन जैसा कोई यंत्र भी हो सकता है।

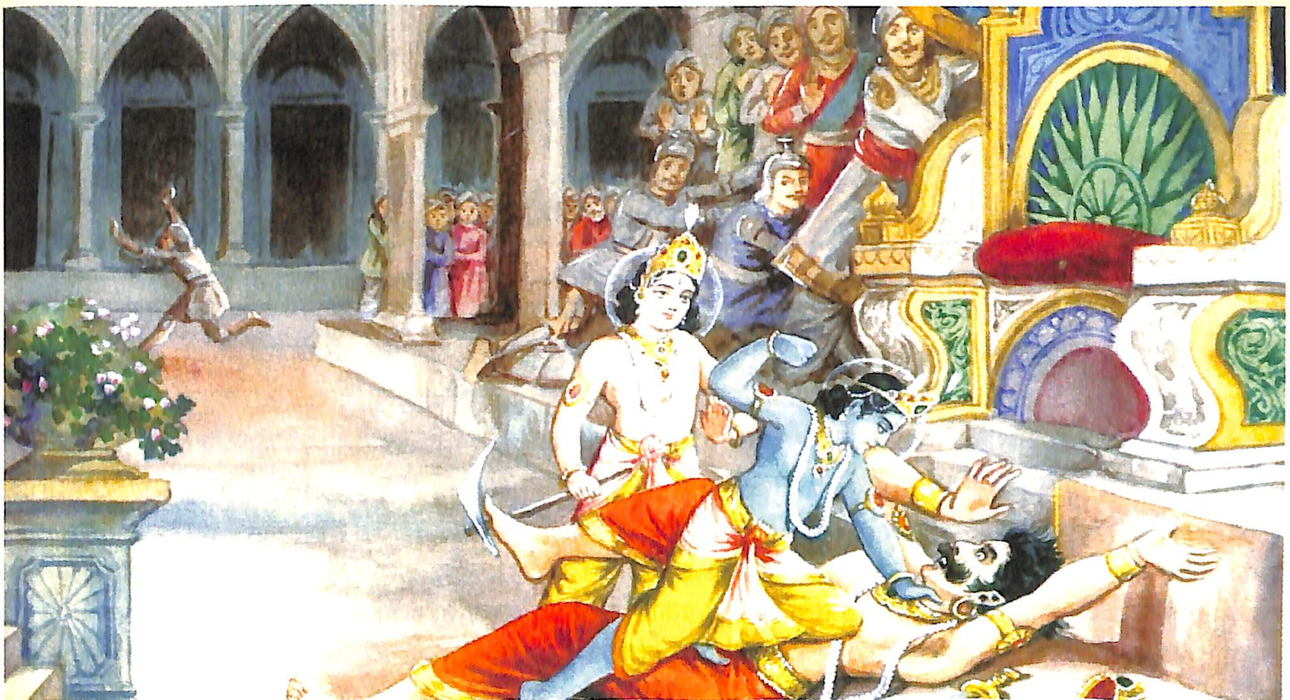
भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन श्रीमद्भागवत महापुराण में किया गया है। जिसका आधार महाराजा परीक्षित को शुकदेव मुनि द्वारा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रवचन

करना है। हमारे पास जो भी प्राप्त पठन सामग्री है उसमें इसे सर्वाधिक लोकमान्यता प्राप्त है। इस धार्मिक ग्रंथ का हिन्दू जनमानस में उतना ही स्थान है जितना कि शरीर में प्राण। भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को हिन्दू समाज में यथास्थिति स्वीकार किया गया है अर्थात उनके परमात्मा स्वरूप को मान्यता दी गई है। ऐसा यूं भी है कि समाज में शिक्षा का प्रसार प्राय: कम ही रहा और चिन्तनशील व्यक्ति भी इसके व्यवहारिक पहलू को जान कर भी धर्मभीरुता के कारण मौन ही रहे हैं। इसका यह मंतव्य नहीं है कि भगवान श्रीकृष्ण को भगवान विष्णु का अवतार नहीं माना जाना चाहिए। भगवान तो जब-जब पृथ्वी पर अत्याचार होते हैं और धर्म की हानि होती है, स्वयं मनुष्य शरीर धारण करके पृथ्वी पर अवतार लेते हैं और इसका भार उतारते हैं। धर्म की स्थापना करके साधुओं की रक्षा करते हैं। गीता में कहा गया है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत .....
संभवामि युगे युगे।

भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं पर एक दृष्टि डालें तो हमें इनके अनेकों रूपों के दर्शन होते हैं जो हमें प्रतीकात्मक संदेश देते हैं। ये आज भी प्रासंगिकता रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी समस्त लीलाओं में परमात्मा तत्व को गौण रखकर कर्म प्रधानता को अधिक महत्व दिया है। भगवान श्रीकृष्ण जनमानस के रूप में एक ऐसे क्रांतिकारी हुए हैं जिन्होंने दुष्ट राजा कंस का संहार करके त्रस्त जनता को राहत प्रदान की थी। उन्होंने इस क्रांति की शुरुआत अपने शैशवकाल से ही कर दी थी। यदि देखा जाए तो उनका जन्म ही इस क्रांति का शंखनाद था। उनका कारागार में जन्म होना, पिता वासुदेव की बेड़ियों का खुलना, कारागार के प्रहरियों का सो जाना और द्वार का खुल जाना, ये सभी कृत्य अत्याचारी कंस के संहारकर्ता परमात्मा तत्व की प्रेरणा से ही सम्पन्न हुए। इनमें वहां की प्रजा व प्रशासन का भी समर्थन अवश्य रहा होगा, यह भी कहा जा सकता है। यादव सरदार वासुदेव जी का बाढ़ग्रस्त यमुना को पार करके, गोकुल से अपने मित्र नंद बाबा के घर जन्मी कन्या को भगवान श्रीकृष्ण

अहंकार का अंत था कंस वध



अहंकार और अधर्म कितना भी बढ़ जाए लेकिन उसका अंत निश्चित है। कंस का वध केवल मात्र घटना नहीं है बल्कि मानवता को यह संदेश देने का प्रयास है कि अहंकारी व्यक्ति कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो लेकिन वह अंतत: विनाश को प्राप्त होता है। मथुरा का राजा कंस अहंकार का प्रतीक था। अहंकार के वश में होकर वह सभी मर्यादाएं भूल चुका था और उसने धर्म को मिटाना शुरू कर दिया था। भगवान श्रीकृष्ण ने करुणावश कई बार कंस को चेताया लेकिन उसने अधर्म का रास्ता नहीं छोड़ा। अपने अहंकार के कारण कंस को यह अभिमान हो गया था कि उसे कोई नहीं मार सकेगा। भगवान श्रीकृष्ण ने कंस का वध कर मानवता को यह संदेश दिया कि अहंकार मात्र भ्रम है जिसका अंत निश्चित है।

गोवर्धन पर्वत को उंगली पर धारण करने का रहस्य



गोवर्धन पूजा करवा कर भगवान श्रीकृष्ण ने देवराज इन्द्र का मानमर्दन किया था। उस समय उस समाज में इन्द्रदेव की पूजा का विधान था। इस तरह की अवधारणा थी कि देवराज इन्द्र की पूजा नहीं की जाएगी तो वह वर्षा नहीं करेगा। यदि वर्षा नहीं होगी तो फसल, फल, फूल, घास पेड़-पौधो तथा पशुओं के लिए चारा नहीं पैदा होगा। यमुना नदी में जल नहीं भरेगा, ताल तलैया सूख जाएंगे। दूसरी तरु वे इसलिए भी इन्द्रदेव की पूजा करते थे कि कहीं ये अतिवृष्टि न कर दें अर्थात इतनी बारिश न हो जाए कि बाढ़ जा जाए और सब जलमग्न हो जाए। भगवान श्रीकृष्ण ने उनसे गोवर्धन पर्वत की पूजा करवाई। हालांकि इसका विरोध भी हुआ लेकिन उन्होंने समझाया कि इन्द्रदेव की पूजा करने से कोई लाभ नहीं है, यह अंधविश्वास है, इससे अच्छा तो गोवर्धन की पूजा करनी चाहिए। क्योंकि यह हमें गऊओं के लिए चारा देता है। फल, फूल व जलावन के लिए लकड़ियां देता है। इस पर हमारी गऊएं चारा चरती हैं। इस प्रकार गोवर्धन की पूजा हुई। भागवत कथा के अनुसार इन्द्रदेव ने इससे कुपित होकर घनघोर वर्षा का आदेश अपने देवों को दिया। भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी तर्जनी उंगली पर धारण करके समस्त ब्रजवासियों की रक्षा व पशु धन की रक्षा की। अंततः देवराज इन्द्र, भगवान श्रीकृष्ण की शरणागत होकर स्तुति करने लगा। इस लीला का व्यवहारिक पहलू हमें अपनी प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। आज पूरे विश्व में पहाड़ों पर पेड़ों व वनस्पतियों के कटने से जलवायु में ऐसे व्यापक परिवर्तन हो रहे हैं जो भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। भगवान ने सभी ब्रजवासियों को अतिवृष्टि या सूखे के प्रकोप से बचने के लिए अपने पहाड़ों और उन पर उपस्थित वन सम्पदा को संरक्षण देने का संदेश दिया है। व्यर्थ के अंधविश्वासों का खंडन करने वाले भगवान श्रीकृष्ण का यह संदेश आज भी व्यवहारिक और प्रासंगिक है। गोवर्धन पर्वत की पूजा व परिक्रमा आज भी पूर्ण श्रद्धा भक्ति से होती है। गोवर्धन का आध्यात्मिक अर्थ है-गोरूपी हमारी इन्द्रियों का वर्धान। गोवर्धन पूजा का अर्थ है-उस परमात्मा की कृपा प्राप्त करना जो हमें प्राण शक्ति प्रदान करते हैं।

पूतना वध का व्यवहारिक संदेश



कुछ दिनों का शिशु यदि पूतना को मार देता है तो यह कार्य केवल परमात्मा ही कर सकता है। इस पूतना वधा के माध्यम से उन माताओं को संदेश दिया गया है जिन्हें अपने शिशुओं को वात्सल्य का अमृत पिलाने की बजाए कृत्रिम दुग्ध रूपी विषपान कराना ज्यादा अच्छा लगता है। यह उन माताओं के लिए भी संदेश है जो अपने शिशुओं को इस संसार में सांस लेने से पहले ही समाप्त कर देती हैं। इसका आध्यात्मिक पहलू त्रिगुणात्मक प्रकृति है। भगवान श्रीकृष्ण आत्मतत्व हैं तो यह प्रकृति चेतना तत्व है। भगवान श्रीकृष्ण की रजोगुणी प्रकृति रूपा माता देवकी, सतोगुणी प्रकृति रूपा माता यशोदा और तमोगुणी प्रकृति रूपा माता पूतना है। तमोगुणी रूपा पूतना मां, भगवान श्रीकृष्ण रूपी आत्म तत्व को ममतामयी स्तनपान के बहाने विषपान कराती है। लेकिन यह पूतना रूपी तमस तत्व, श्रीकृष्ण रूपी आत्म तत्व को समाप्त नहीं कर पाया और वह स्वयं ही समाप्त हो गई।

के बदले में ले आना भी बिना किसी मानवीय सहमति, सहायता और परमात्मा की इच्छा के संभव नहीं हो सकता था। इसे चमत्कार ही कहा जाएगा कि एक साधारण मनुष्य ने इतनी दुसाध्य योजना को सफलतापूर्वक पूरा किया। इसका यही व्यवहारिक पहलू है कि यदि मनुष्य आत्मविश्वास के साथ प्रभु का स्मरण करके ठान ले तो बड़े से बड़ा दुसाध्य कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। परमात्मा उसकी सहायता करता है जो अपनी मदद स्वयं करना जानता है।

ज्योतिष की भविष्यवाणी से प्रभावित अत्याचारी कंस देवकी की आठवीं संतान को जब नहीं मार सका तो उसे अपने गुप्तचरों के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में होने का ज्ञान हुआ। इस सूचना से उसका चिन्तित होना स्वाभाविक ही था। इसके लिए वह कोई सेना तो नहीं भेज सकता था क्योंकि यह व्यवहारिक रूप से संभव नहीं था अत: गुप्त रूप से उस संहारकर्ता का वध करवाने के लिए अपने विभिन्न सेवकों को भेजा जो छद्म वेश धारण करने में सक्षम थे। इतना ही नहीं वे मायावी और महाबलशाली भी थे।

भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं में शकटासुर वध, तृणावर्त वध, बकासुर वध, अधासुर और धेनुकासुर वध का वर्णन भी जनमानस को चमत्कृत और अलौकिक आनन्द प्रदान करता है। भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा माटी खाना और माता यशोदा को अपने मुख में पूरे ब्रह्माण्ड का दर्शन करा देना भी इनके परमात्मा तत्व को सत्यापित करता है। इतिहास इस सत्य की गवाही देता है कि इस देवभूमि भारतवर्ष में कई विलक्षण महान आत्माओं ने जन्म लिया है तो परमात्मा की विशेष कृपा से अद्वितीय थे। उनके द्वारा बाल्यावस्था में ही किए गए कर्मों

शेष पढ़िए पृष्ठ 32 पर



असाध्य रोग से पीड़ित बच्चा ठीक हो गया

दुख निवार इतनी सहज है

प्रभु नाम की शक्ति से मेडिकल साइंस हैरान

असाध्य रोग से पीड़ित बच्चा ठीक हो गया

जो स्कूल निकालना चाहता था उसी स्कूल का चहेता बना बच्चा

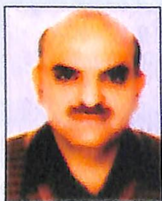


पुणे। जिस समस्या का समाधान मेडिकल जगत में भी न हो, उसका स्थाई समाधान यदि मात्र प्रभु का नाम लेने से हो जाए तो इससे बड़ा आश्चर्य क्या होगा? महाराष्ट्र के पुणे में रहने वाली श्रीमती बिन्दू सिंह का अनुभव मेडिकल साइंस और बुद्धिजीवियों को चौंकाने वाला है। इनका बेटा उज्ज्वल सिंह ओटिस्टिक नाम की बीमारी से पीड़ित था जिसका इलाज पूरी मेडिकल साइंस में कहीं नहीं है। इस बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति में अनेक प्रकार के मानसिक और शारीरिक विकार उत्पन्न होने लगते हैं।

14 वर्ष का उज्ज्वल सिंह जब इस बीमारी की चपेट में आया तो न केवल उसके परिवार वाले बल्कि पड़ोसी और स्कूल वाले भी बहुत परेशान हो गए। यह बच्चा स्कूल और पड़ोस में उल्टी-सीधी हरकतें करता था। बच्चे की शारीरिक और मानसिक अवस्था दिन-प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। श्रीमती बिन्दू सिंह और उनके परिवार ने उज्ज्वल को अनेक विशेषज्ञ डाक्टरों को दिखाया और कई प्रकार की थैरेपियां करवाई लेकिन बच्चे को कोई लाभ नहीं हुआ। श्रीमती बिन्दू सिंह के अनुसार वह कई साल तक अपने बेटे को तरह-तरह की दवाइयां देती जा रही थी। लेकिन उसका एक प्रतिशत भी असर देखने को नहीं मिल रहा था। दवाओं के असर से उज्ज्वल ने बोलना भी बंद कर दिया था। उसकी आवाज बहुत कम निकलती थी। राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान सहित अनेक विशेषज्ञ मानसिक और मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों ने भी अपने हाथ खड़े कर दिए थे। किसी के पास इस बीमारी का कोई समाधान नहीं था।

चारों ओर से संकटों से घिरी एक मां को जब पता चला कि परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी द्वारा प्रदान किए जाने वाले शास्त्रोक्त पाठ से लाखों लोगों ने असाध्य दुखों से मुक्ति पाई है तो उन्हें उम्मीद की किरण दिखाई दी। उन्होंने समागम में प्रभु कृपा नाम पाठ ग्रहण किया और नियमित रूप से इस पाठ को करने लगीं। कुछ समय बाद ही उनका बेटा उज्ज्वल सिंह उस बीमारी से पूर्णत: मुक्त हो गया जिसका इलाज मेडिकल साइंस में नहीं है। जो बच्चा बोलने में भी असमर्थ हो गया था वह धाराप्रवाह बोलने लगा। जो स्कूल उस बच्चे को निकालने की धमकी दे चुका था, आज यही बच्चा उस स्कूल का सबसे मेधावी और चहेता विद्यार्थी बन गया है।

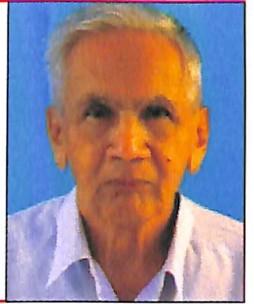
प्रभु कृपा से तीस साल पुरानी कब्ज हुई समाप्त



गुरदासपुर। बटाला में रहने वाले श्री रमेश भाटिया को 30 साल से गैस और कब्ज की भयंकर बीमारी थी। श्री भाटिया ने इलाज के लिए कोई विशेषज्ञ डाक्टर नहीं छोड़ा लेकिन उनकी बीमारी का समाधान किसी के पास नहीं था। उन्होंने एलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेद जैसी पैथियों का सहारा लिया लेकिन उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। भयंकर रोग से मुक्ति पाने के लिए कई चूर्ण लिए और योग इत्यादि भी किए लेकिन उन्हें निराशा ही हाथ लगी। कब्ज के कारण उन्हें लगातार गैस और सिरदर्द भी रहने लगा था। हर तरफ से निराश हो चुके श्री रमेश भाटिया ने आखिरकार समागम में जाकर दिव्य बीज मंत्रों की कृपा ग्रहण की। नियमित पाठ से आज वे पूर्णत: स्वस्थ हैं और 30 साल पुरानी कब्ज से मुक्ति पा चुके हैं।

ण समाचार
दुखों से मुक्ति

प्रोस्टेट कैंसर से मिली मुक्ति



यूरिन के रोग से मिली पूर्णतः मुक्ति



चंडीगढ़। पंचकुला के गुरचरण की दृष्टि में परमात्मा से बढ़कर कोई चिकित्सक नहीं है। इन्हें काफी समय से पेशाब का गंभीर रोग था। चंडीगढ़ के चर्चित अस्पताल पीजीआई में आपरेशन करवाने के बावजूद इन्हें गंभीर रोग से मुक्ति नहीं मिल पा रही थी। जब इन्होंने पीजीआई में डाक्टरों से दौबारा कंसल्ट किया तो उन्होंने कहा कि आपका दोबारा आपरेशन होगा लेकिन फिर भी आपको स्थाई समाधान नहीं मिल पाएगा। श्री गुरचरण सिंह ने चारों तरफ से निराश होने के बाद परम पूज्य ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी द्वारा ग्रहण किए गए दिव्य बीज मंत्रों का जाप शुरू कर दिया। आखिरकार प्रभु में किया हुआ इनका विश्वास जीत गया और ये पूर्णतः स्वस्थ हो गए। इन्होंने कोई आपरेशन नहीं कराया और न ही दोबारा डाक्टरों से कंसल्ट किया।

पाठ से कोढ़ी जैसी त्वचा निखर गई
गंभीर एलर्जी रोग से पूर्णतः मुक्त हुई महिला



सहारनपुर। चिकित्सक जानते हैं कि जब सोरिसिस रोग अत्यधिक गंभीर हो जाए तो उसका इलाज बहुत मुश्किल हो जाता है। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में रहने वाली श्रीमती उषा रानी को जब यह रोग हुआ तो उनके पूरे शरीर के अंग पकने लगे। उनके हाथों पैरों की उंगलियां जगह जगह से छिल गई थी और उनकी हालत कोढ़ी की तरह हो गई थी। जो भी उनकी हालत देखने लगता वह रोने लगता था। श्रीमती उषा सिंह ने तरह तरह के डाक्टरों को दिखाया और कई प्रकार का इलाज करवाया लेकिन उनका रोग फैलता जा रहा था। उन्होंने घर का सारा काम बंद कर दिया था और वे बिस्तर पर पड़ गई थी। एक डाक्टर ने तो उन्हें यहां तक कह दिया था कि उन्हें ब्लड कैंसर भी हो सकता है। अपनी खराब हालत को देखकर श्रीमती उषा सिंह बुरी तरह टूट गई थीं। एलोपैथिक, आयुर्वेदिक सहित तरह तरह के इलाज करवाने पर भी उन्हें लाभ नहीं हुआ तो उन्होंने नियमित रूप से पाठ का सहारा लिया। उन्हें प्रभु की शक्ति पर पूर्णतः विश्वास था। नियमित पाठ करने के कुछ समय बाद उनका असाध्य एलर्जी का रोग अचानक ठीक होने लगा। उनके हाथ पैर भी पूरी तरह ठीक हो गए। श्रीमती उषा रानी अपना अनुभव बताती हुई रो पड़ती है। उनका मानना है कि सद्‌गुरु की कृपा से बढ़कर इस दुनिया में कोई नहीं है।

प्रोस्टेट कैंसर से मिली मुक्ति



अहमदाबाद। गुजरात के साबरकौठा के ठाकर मगनलाल के लिए गुरु कृपा से बढ़कर कुछ नहीं है। जब इनकी तबीयत बहुत खराब हो गई तो इन्होंने सूरत के दो अस्पतालों में अपना इलाज करवाना शुरू किया। इनका यूरिन बंद हो चुका था और डाक्टरों ने स्पष्ट कह दिया था कि इनकी बीमारी बहुत अधिक गंभीर है। कुछ दिनों के इलाज के बाद डाक्टरों ने इनका प्रोस्टेट का आपरेशन कर दिया। श्री मगनलाल जी बताते हैं कि जब उन्हें पता चला कि वे कैंसर से पीड़ित हैं तो वे बहुत अधिक डर गए। इन्होंने मुंबई में प्रभु कृपा ग्रहण किया और नियमित रूप से पाठ शुरू कर दिया। जब इनकी दोबारा रिपोर्ट आई तो प्रोस्टेट कैंसर ठीक हो गया और रिपोर्ट पूरी तरह नार्मल थी। इन्होंने वापस मुंबई आकर हिन्दुजा अस्पताल में भी अपना चैकअप कराया तो वह रिपोर्ट भी नार्मल आई। गंभीर बीमारी के निदान से मगनलाल जी फूले नहीं समा रहे और वे बार-बार प्रभु को धन्यवाद दे रहे हैं।

इन समाचारों में दिए गए भाई-बहनों के लिखित अनुभव, उनकी मेडिकल रिपोर्टें व दस्तावेज देखिए पेज नं. 48 पर

पृष्ठ 29 का शेष

आज का कालिया नाग है प्रदूषण



कालिया नाग से यमुना की मुक्ति भी खेल ही खेल में भगवान श्रीकृष्ण ने इस तरह कर दी कि यमुना प्रदूषण मुक्त हो गई। यमुना नदी में कालिया नाग के सपरिवार रहने से इसका जल इतना विषाक्त हो गया था कि इसे पीने वाले पशु पक्षी मर जाते थे। इस घाट को कालीदह के नाम से जाना जाता था। एक बार इस कालीदह से खेल-खेल में ही बाल श्रीकृष्ण यमुना में कूद गए। अपने बल और पराक्रम से कालिया नाग को यमुना से खदेड़ दिया। इस घटनाक्रम में कालिया नाग और उसके परिवार को भगवान श्रीकृष्ण ने क्या कहा और उन्हें रमणीक द्वीप में गरुड़ के भय से मुक्त करके भेजा, यह अलौकिक विषय है। इसका व्यवहारिक पहलू यह है कि आज हमारे देश में पवित्र नदियां मैली हो गई है। मां गंगा, मां यमुना जैसी पवित्र नदियां इतनी प्रदूषित व गन्दी हो गई हैं कि इनके जल का आचमन भी नहीं किया जा सकता। धर्म कर्म व पूजा पाठ के बहाने से इसमें पूजा सामग्रियों व मूर्तियों का विसर्जन तो किया ही जाता है साथ में पोलीथीन, गन्देनालों का पानी, औद्योगिक इकाइयों का रासायनिक गन्दा पानी भी इनमें डाला जा रहा है। इससे ये पवित्र जल विषाक्त हो गए हैं। आज इन पवित्र नदियों की दुर्दशा को सुधारने की आवश्यकता है। यह कालिया नाग ही इनका प्रदूषण है जिसे पवित्र मां यमुना से भगाना होगा ताकि इसका पवित्र जलपान करके आत्मशुद्धि हो सके। इसका आध्यात्मिक पहलू यह है कि भक्ति, कर्म व ज्ञानरूपी यमुना में जो अहंकार है वह कालिया नाग का प्रतिरूप है, जिससे परमात्मा स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण हमारी रक्षा करते हैं।

की तुलना किसी चमत्कार से ही की गई है। भक्त बालक प्रहलाद, भक्त बालक ध्रुव, बालक नचिकेता आदि ऐसे कई उदाहरण यहां संदर्भित किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त कई वीर बालकों का नाम भी इतिहास में अंकित है। भगवान श्रीकृष्ण जो कि स्वयं ही परमात्मा के अवतार थे यदि उनकी लीलाओं में पराक्रम के साथ-साथ अलौकिक पुट भी आता है तो कोई हैरानी की बात नहीं है। यहां यह महत्वपूर्ण है कि भगवान श्रीकृष्ण ने ग्राम्य जीवन को सार्थकता प्रदान की। उन्होंने उस सम-सामायिक पशुपालन और खेती को प्रोत्साहित किया जो हमारे भारतीय समाज की प्रमुख जीविका के साधन थे। स्वयं भी बाल ग्वाले के रूप में गऊएं चराने के लिए जंगलों में जाते और अपने सखाओं को युद्ध कला भी सिखाते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जितने भी मायावी छद्म वेशधारी असुरों का वध भगवान श्रीकृष्ण ने किया, उसमें उनके भ्राता बलराम



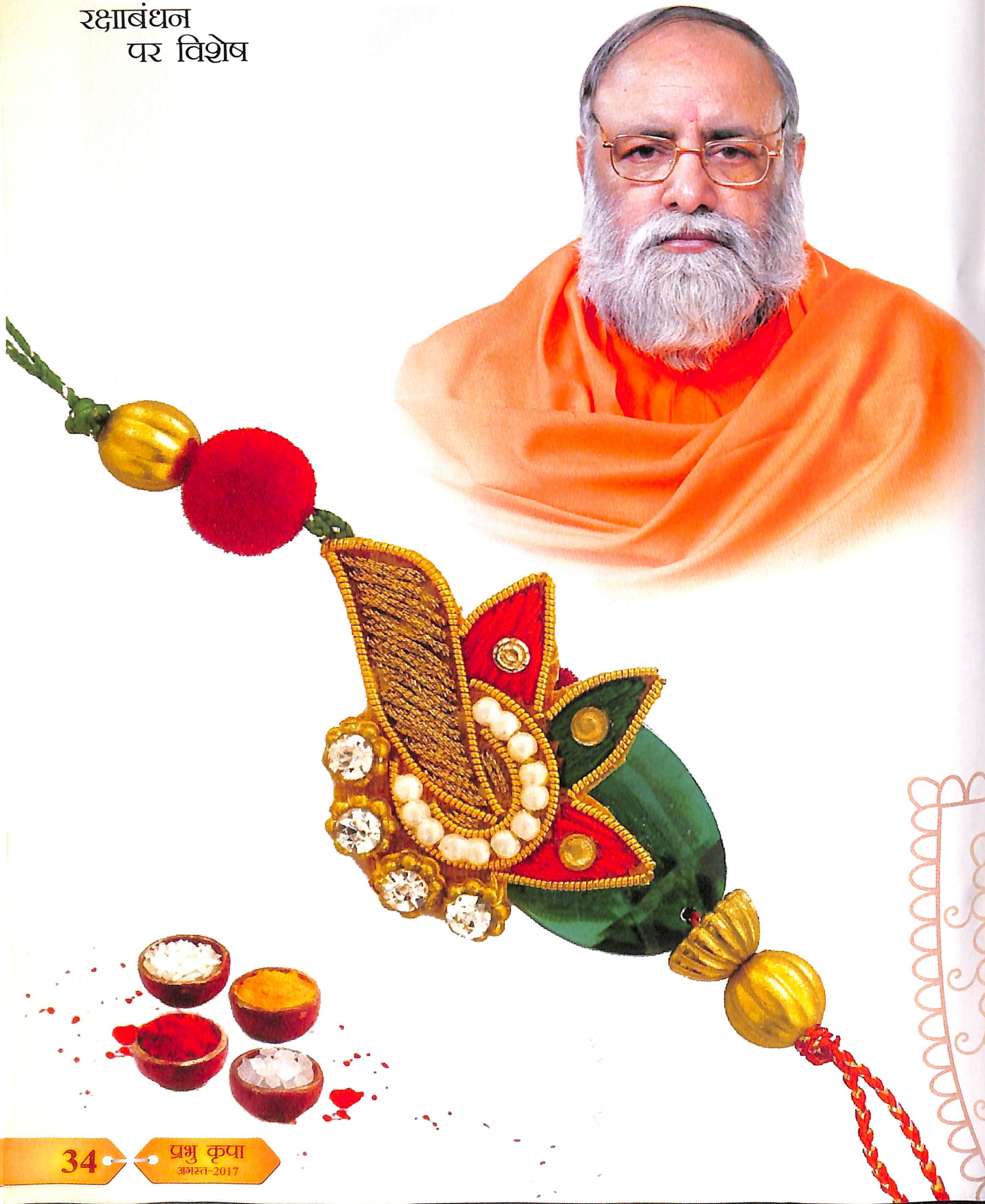
और ग्वाल सखाओं का योगदान भी रहा। अपनी विलक्षण बुद्धि के कारण इनका वध भगवान ने क्षणों में ही कर डाला। भगवान श्रीकृष्ण की इन लीलाओं का आध्यात्मिक पहलू भी है। भगवान श्रीकृष्ण ने जिन असुरों का वध किया है वे समाज की बुराइयां हैं। गोकुल से अर्थ है कि हमारी पांच इन्द्रियों का संसार। इस संसार में रहने वाले व्यक्ति को अपने अन्दर व्याप्त आसुरी प्रवृत्तियों को पहचान कर समाप्त कर देना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण का एक रूप समाज में व्याप्त बुराइयों का हनन करने वाला है तो दूसरा रूप प्रेम के संदेशवाहक का है। भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी की तान पर गऊओं का चला आना, गोपियों का आनन्द की अतिरेक में अपनी सुधबुध खो देना, यहां तक कि पक्षियों के झुंडों का घिर आना आदि को यदि दिव्य और अलौकिक घटनाक्रम कहा जाए तो असत्य नहीं होगा। आज के परिवेश में यह व्यवहारिक संदेश है कि हमें सबसे पहले अपने देश में पूर्ति करनी चाहिए और बाद में निर्यात करना चाहिए। हमारी वर्तमान पीढ़ी को दूध, दही की अत्यंत आवश्यकता है लेकिन दूध, दही की बजाए बर्गर, पिज्जा व जंक फूड का बोलबाला है। ये खानपान हमारे स्वास्थ्य को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है।

गोपियों के वस्त्र हरण की लीला को प्राय: आलोचक दृष्टि से देखा जाता है। इसे कभी-कभी हास्य और चरित्रहनन का विषय बनाया जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने जब यह देखा कि कुछ गोप कुमारियां कार्तिक मास में व्रत धारण करके नदी में स्नान करती हैं तब उन्हें ज्ञान देने के लिए यह लीला की थी। भगवान का उन्हें नग्न अवस्था में देखने का कोई मन्तव्य नहीं था वरन उन्हें यह सीख देना चाहते थे कि तालाब या नदी में कभी नग्न अवस्था में स्नान नहीं करना चाहिए। क्योंकि इसमें हमारी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वरुण देव का वास होता है। इसका एक व्यवहारिक पहलू यह भी है कि वैसे तो नदी या तालाब में नग्न होकर स्नान ही नहीं करना चाहिए और दूसरा संकेत यह है कि अपने वस्त्रों को भी सुरक्षित रूप से रखना चाहिए ताकि कोई उठा न ले। कई बार दुरात्मा पुरुष वस्त्र चुराकर अपने कुत्सित मंतव्य की पूर्ति भी करते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला आत्मा और परमात्मा के मिलन का अलौकिक प्रारूप है। भागवत कथा के अनुसार वे गोपियां जो भगवान श्रीकृष्ण के महारास में सम्मिलित होती थीं, उन्होंने पूर्व जन्म में भारी तपस्या की थी। वे साधक और तपस्वी ही गोपियों का जन्म लेकर ब्रज भूमि में आए थे। इस रासलीला को यदि भगवान श्रीकृष्ण कथा कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जो गोपियां उस श्रीकृष्ण कथा रूपी महारास में आती थीं, वे परमात्मा तत्व का दर्शन करती थीं। वे इतनी आनन्दित हो जाती थीं कि अपनी सुधबुध बिसरा कर कृष्ण-कृष्ण कहने लगती थीं और इतना ही नहीं वे एक दूसरे को ही कृष्ण कहने लगती थीं। भगवान श्रीकृष्ण काम रहित हैं क्योंकि वे स्वयं कहते हैं कि जहां राम हैं वहां काम नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण की रासलीला का व्यवहारिक पहलू यह है कि परमात्मा की निष्काम भक्ति करनी चाहिए। दूसरे अर्थों में हमारे मन की कृतियों रूपी गोपियों को भगवद् रस में सराबोर करके प्रभु कृपा नाम का आनन्द लेना चाहिए। □

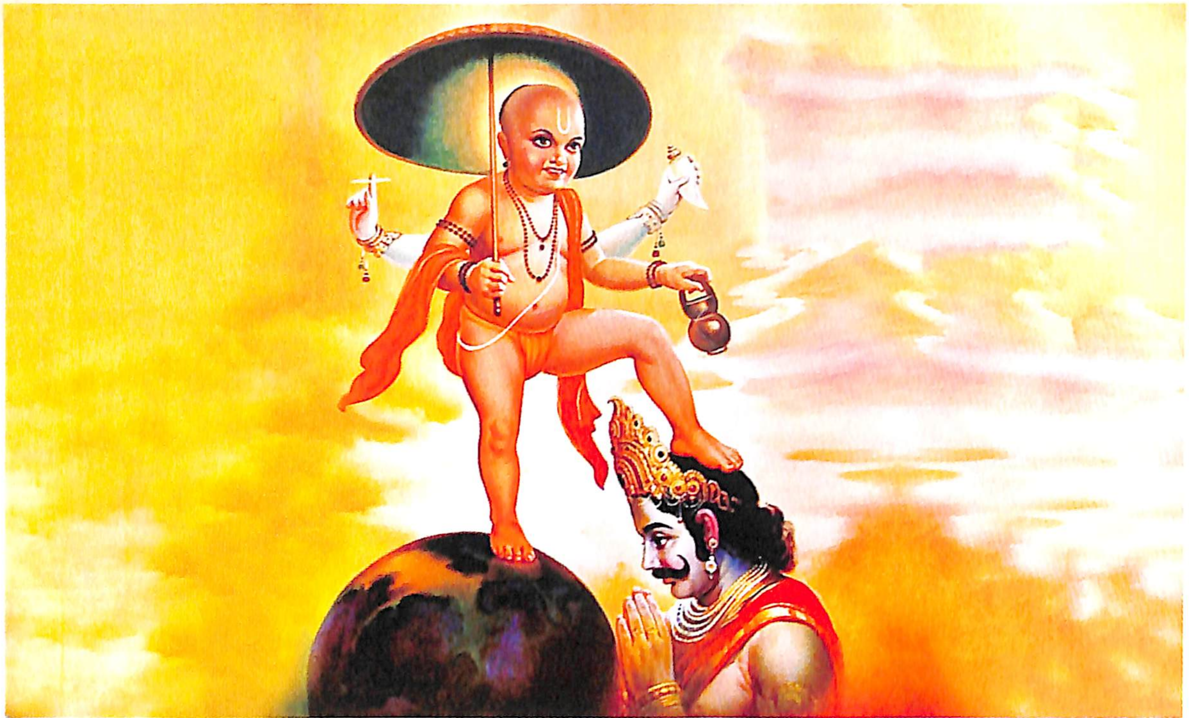
रक्षाबंधन पर विशेष



रक्षासूत्र और गुरु

रक्षाबंधन या रक्षासूत्र केवल भाई-बहन का ही त्यौहार नहीं है वरन इसका विस्तृत स्वरूप है। रंग-बिरंगे सूती व रेशमी धागों का रक्षासूत्र सामाजिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्व रखता है। रक्षासूत्र केवल बहन के द्वारा भाई को ही नहीं बांधा जाता है। रक्षासूत्र का अर्थ है कि जो रक्षक हो उसे रक्षासूत्र अर्पण किया जाए। संस्कृत भाषा की 'रक्ष' धातु से बना रक्षा का अर्थ है सुरक्षित करना, बचाना। यदि कोई व्यक्ति निर्बल है और वह किसी सबल व्यक्ति की कलाई में रक्षासूत्र बांधकर अपनी रक्षा की याचना अथवा कामना करता है तो उसे रक्षाबंधन कहा जाता है। अतः इस पर्व को केवल भाई-बहन तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। रक्षक कोई भी हो सकता हैं। जब स्त्री नाबालिग होती है तो माता-पिता व भाई उसकी रक्षा करते हैं तथा विवाह होने के बाद उसका पति रक्षा करता है। इसी तरह बच्चों की रक्षा माता-पिता करते हैं लेकिन माता-पिता की वृद्धावस्था में उसकी संतान रक्षा करती है। किसी भी असहाय व विकलांग व्यक्ति की रक्षा कोई भी ऐसा व्यक्ति कर सकता है जिसका उससे कोई रिश्ता न हो। रक्षासूत्र बांधने के बाद जो रिश्ता बनता है वह रक्षक और रक्षिता का बन जाता है। भौतिक रूप से सुख समृद्धि के लिए कोई भी सहायक बन कर आ सकता है लेकिन अलौकिक आपदाओं के लिए केवल प्रभु से ही रक्षा करने के लिए प्रार्थना की जाती है।

रक्षासूत्र का पौराणिक स्वरूप



विष्णु पुराण में वर्णित कथा के अनुसार राजा बलि ऐसे दैत्य सम्राट हुए जिन्होंने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली थी। बलि इन्द्र लोक को जीतकर देवताओं को भी वहां से निष्कासित कर देना चाहते थे। ये महाप्रतापी दैत्यराज महान तपस्वी व दानवीर भी थे। इनकी कीर्ति तीनों लोकों में गाई जाती थी। देवता दुखी होकर भगवान विष्णु के पास गए और उनसे प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने उनकी व्यथा जानकर आश्वस्त किया और कहा कि वे यथोचित प्रयास करके दैत्यराज बलि से इन्द्रलोक को स्वतंत्र रखेंगे। सभी देवतागण भगवान विष्णु द्वारा अभयदान देने पर प्रसन्न होकर अपने-अपने स्थानों पर चले गए और भगवान विष्णु ने युक्ति विचार कर वामन अवतार धारण किया। दैत्यराज बलि ने अपने गुरु शुक्राचार्य के सान्निध्य में 100वें यज्ञ की पूर्णाहुति छोड़कर प्रणाम ही किया था कि उनके सामने वामन रूप में भगवान विष्णु प्रकट हो गए। उन्हें विप्र रूप में देखकर राजा बलि ने प्रणाम किया और वहां आने का मंतव्य पूछा। वामन रूप में भगवान विष्णु ने कहा, 'हे दान्वेन्द्र, मुझे तीन पग भूमि दान में चाहिए।' यह सुनकर दैत्य गुरु शुक्राचार्य चौंक गए और ध्यान लगाकर जान गए कि ये भगवान विष्णु हैं। जब राजा बलि संकल्प करने लगे तो गुरु शुक्राचार्य ने रोककर कहा कि संकल्प मत करो क्योंकि यह आपके लिए अनिष्टकारी होगा। लेकिन राजा बलि ने कहा कि मैं अपने संस्कार व कर्तव्यों से विमुख नहीं हो सकता अत: मैं इन्हें अवश्य दान दूंगा। संकल्प करके राजा बलि ने भगवान वामन को तीन पग भूमि नापने के लिए कहा। इतना सुनते ही भगवान वामन ने अपने शरीर का विस्तार करना शुरू कर दिया। पहले पग में सारी पृथ्वी और दूसरे में आकाश नाप कर बोले कि तीसरा पग कहां रखूं। तब राजा बलि ने अपना शरीर प्रस्तुत कर दिया और कहा कि आप तीसरा पग इस पर रखें। भगवान वामन ने तीसरा पग राजा बलि के सिर पर रख दिया और धकेल कर पाताल में भेज दिया। दैत्यराज बलि ने वहां जाकर घनघोर तपस्या करके भगवान विष्णु को प्रसन्न किया। राजा बलि ने भगवान विष्णु से वर मांगा कि वे बैकुण्ठ छोड़कर रात-दिन मेरे सामने रहो। भगवान विष्णु ने उसे सहर्ष वरदान दे दिया और पाताल में रहने लगे। इससे विष्णु पत्नी लक्ष्मी बहुत व्यथित हुईं। भगवान विष्णु के न होने से अन्य कार्यों में भी बाधा आने लगी। तब नारद जी ने माता लक्ष्मी को एक उपाय बताया। इस उपाय के तहत माता लक्ष्मी श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन पाताल में राजा बलि के पास गईं और उनकी कलाई पर रक्षासूत्र बांधा। जब राजा बलि ने प्रसन्न होकर कुछ मांगने के लिए कहा तब माता लक्ष्मी ने कहा कि आप भगवान विष्णु को मुक्त करके वैकुण्ठ जाने दें। राजा बलि ने प्रसन्न होकर भगवान विष्णु को उनके द्वारा दिए गए वरदान से मुक्त कर दिया।

रक्षासूत्र में बंधे ऐतिहासिक क्षण



राजा पुरुवास (पोरस) और यूनान के राजा सिकन्दर (अलैक्जेन्डर) का युद्ध भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है। इस युद्ध में राजा पुरुवास का पलड़ा भारी था। इसी दौरान सिकन्दर की पत्नी रोक्साना ने राजा पुरुवास को राखी भेजकर अपने पति की प्राण रक्षा की कामना की थी। राजा पुरु और सिकन्दर का द्वन्द्वयुद्ध निर्णायक दौर में चल रहा था। राजा पुरु उसका वध करने ही वाले थे कि उनका ध्यान कलाई पर बंधे उस रक्षासूत्र पर चला गया जो सिकन्दर की पत्नी ने भेजा था। इतिहास गवाह है कि राजा पुरु ने सिकन्दर की जान बख्श दी थी। राखी की मर्यादा का पालन करने का एक और उदाहरण इतिहास में वर्णित है। चित्तौड़ की महारानी कर्मावती को जब गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह के द्वारा राज्य पर हमला करने का ज्ञान हुआ तब उसने मुगल बादशाह हुमायूं को राखी भेज कर रक्षा की गुहार की। गुजरात का सुल्तान बहादुरशाह बहुत तेजी से चित्तौड़ पर चढ़ आया और हुमायूं समय पर नहीं पहुंच पाया। रानी कर्मावती ने अपनी इज्जत बचाने के लिए अन्य 1300 राजपूत स्त्रियों के साथ जलती हुई विशाल चिता में जलकर जौहर कर लिया। हुमायूं ने वहां पहुंच कर बहादुरशाह से युद्ध किया और उसे हराकर बन्दी बना लिया। बादशाह हुमायूं ने कर्मावती द्वारा भेजी हुई राखी का सम्मान करते हुए उसके पुत्र विक्रमजीत सिंह को चित्तौड़ की गद्दी सौंप कर राजतिलक कर दिया। राजस्थान में राम राखी और चूड़ा राखी बांधने का भी प्रचलन है। छींटदार फुन्दे से सजी हुई राम राखी केवल देवताओं को ही बांधी जाती है तथा चूड़ा राखी बहनें अपनी भाभियों की चूड़ियों में बांधती हैं। युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पहले राजपूत योद्धाओं की कलाइयों में राजपूत स्त्रियां रक्षा सूत्र बांधकर उनकी विजय की कामना करती थीं।

इन सबसे इतर एक परम सत्य यह है कि सद्‌गुरु ही लौकिक व अलौकिक विपदाओं से रक्षा करते हैं। गुरु गीता में भगवान शिव ने कहा है-

कुलं धनं बलं शास्त्रं बांधवास्सोदरा इमे ।
मरणे नोपयुज्यन्ते गुरुरेको हि तारकः ॥

अपना कुल, धन, बल, शास्त्र, नाते-रिश्तेदार, भाई, ये सब मृत्यु के अवसर पर कुछ काम नहीं आते। एकमात्र सद्‌गुरुदेव ही उस समय के तारणकर्ता हैं। इसलिए सद्‌गुरु का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। इस पावन पर्व के अवसर पर सद्‌गुरु को रक्षासूत्र बांधना चाहिए ताकि वे लौकिक व अलौकिक आपदाओं से हमारी रक्षा करें। भारतवर्ष के इतिहास में तथा पौराणिक साक्ष्यों के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि गुरु



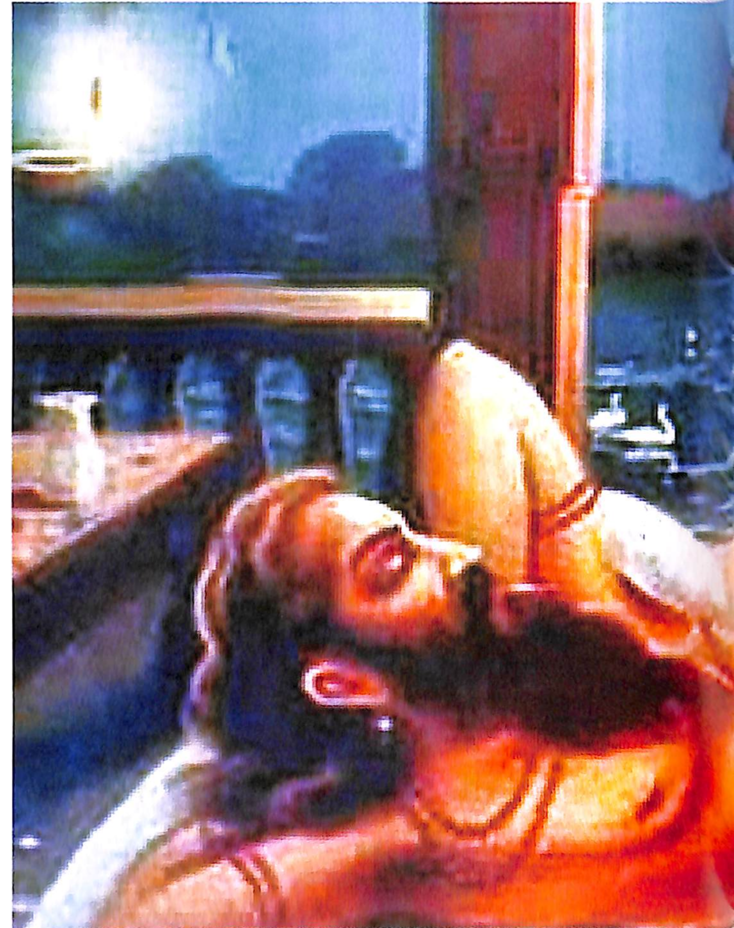
शची द्वारा बांधे गए रक्षासूत्र के कारण देवराज इंद्र विजयी हुए

ही शिष्यों की रक्षा करते हैं। यह तथ्य इस तरह भी समझा जा सकता है कि गुरु ही शिष्य को ज्ञान तथा शक्तियां प्रदान करके इतना सबल बनाते हैं कि वे किसी भी महान बाधा को पार करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं। किसी भी विपदा से गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान, शक्तियां और मंत्र ही रक्षा करता है। ऐसी अवस्था में जब कोई भी अपने पास नहीं होता, गुरु का आशीर्वाद ही शिष्य की रक्षा करता है। गुरुदेव के द्वारा दिए गए मंत्र के प्रभाव से शिष्य के सभी कार्य सफल होते हैं। जिन पापों को मनुष्य अज्ञानतावश भी करता है, वह भी सद्गुरु की कृपा से नष्ट हो जाते हैं तथा कुकर्मों के बुरे फल से भी मुक्ति प्राप्त होती है। बिना गुरु ज्ञान नहीं मिलता और न ही लाभ प्राप्त होता है। मनुष्य चाहे कितना ही पढ़ लिख जाए और कितना ही ग्रंथों, वेदों, पुराणों तथा धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर ले, सद्गुरुदेव के बिना उनके सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। इन सबके ज्ञान प्रदान करने वाले केवल सद्गुरुदेव ही हैं अतः हमें सद्गुरुदेव की शरण में जाना चाहिए। भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा व भगवान विष्णु की रात-दिन पूजा करना भी बिना गुरु तत्व को जाने निरर्थक है क्योंकि इसको जाने बिना इन देवों की कृपा भी प्राप्त नहीं हो सकती। परमात्मा सद्गुरु के माध्यम से ही कृपा प्रदान करता है। सद्गुरु के द्वारा दिए गए प्रभु कृपा नाम पाठ के प्रभाव से ही मनुष्य के कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। सद्गुरु ही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के मार्ग को बताता है। मोक्ष की इच्छा रखने वालों को सद्गुरु की शरण में जाना चाहिए। सद्गुरु की रक्षा में जाने मात्र से ही जन्म-जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। आजीवन सद्गुरु का ध्यान करने वाला मनुष्य ब्रह्ममय हो जाता है। किसी भी स्थान में उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता तथा सर्वदा मुक्ति का अहसास करता है। सद्गुरु ही यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि आदि का ज्ञान करवाता है। ऐसे रक्षक सद्गुरुदेव को श्रावण मास की पूर्णिमा वाले दिन रक्षासूत्र बांधकर अपनी रक्षा की याचना करनी चाहिए।

येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेन त्वामनुबध्नामि मा चल मा चल ॥

जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली, दानवीर राजा बलि को बांधा गया था, उसी सूत्र से मैं आपको बांधता हूं अतः आप अपने संकल्प से कभी विचलित मत होना।

पौराणिक कथाओं के अनुसार दैत्य व देवताओं के गुरु क्रमशः शुक्राचार्य और बृहस्पतिदेव ने अपने शिष्यों की समय-समय पर



रक्षा की थी। दैत्यों व दानवों के युद्धों में जिन मायावी शस्त्रों व अस्त्रों का प्रयोग किया जाता था वे भी इन गुरुओं के अनुसंधान ही थे। ये गुरु केवल मांत्रिक ही नहीं थे, वैज्ञानिक भी थे। जिस प्रकार आज के आधुनिक काल में खतरनाक परमाणु बम व मिसाइलें हैं जो कुछ क्षणों में बड़े स्तर पर विनाश कर सकती है, उस समय भी ऐसा ही इन गुरुओं की भी खोज थीं। दैत्य गुरु ने कई बार युद्ध में मारे गए दैत्य सैनिकों व दैत्य सरदारों को मृत संजीवनी विद्या के द्वारा जीवित कर दिया था। इसी प्रकार देवगुरु बृहस्पतिदेव ने भी कई बार देवताओं की दैत्यों से रक्षा की थी। भविष्य पुराण के अनुसार देवगुरु बृहस्पतिददेव ने एक बार देवराज इन्द्र को अपनी शक्ति प्रदान की थी। एक बार जब देवों और दानवों में भीषण संग्राम हो रहा था तब देव सेना हारने लगी। इस संभावित हार से घबराकर इन्द्रदेव गुरु बृहस्पतिदेव की शरण में गए। गुरु बृहस्पतिदेव ने तभी अपनी साधना शक्ति का अंश एक रेशमी डोरी में अभिमंत्रित किया और इन्द्रदेव की पत्नी शची को आदेश दिया कि इसे देवराज की कलाई पर बांध दो। इस अभिमंत्रित रक्षासूत्र के प्रभाव से देवराज इन्द्र को जो शक्ति प्राप्त हुई उसके कारण देवताओं की रक्षा हुई और उन्हें विजय प्राप्त हुई। इस प्रकार सद्गुरु ने सशरीर रक्षा तो नहीं की लेकिन अपनी अशरीरी शक्ति के द्वारा उनकी रक्षा की। गुरु शरीर का नाम नहीं है। गुरु द्वारा दिया गया मंत्र और आशीर्वाद शिष्य की रक्षा करता है।

भगवान श्रीरामचन्द्र व भगवान लक्ष्मण को भी गुरुदेव की कृपा से कई ऐसी शक्तियां प्राप्त हुईं थीं जिनका प्रयोग उन्होंने अपने वनवास काल और रावण से हुए युद्ध में किया था। सर्वप्रथम गुरु वशिष्ठ ने उन्हें प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा प्रदान करके लौकिक व अलौकिक शक्तियां प्रदान की और तत्पश्चात गुरु विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर प्रदान कीं। जब भगवान श्रीराम व भगवान श्री लक्ष्मण ने गुरु विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की तब प्रसन्न होकर उन्हें बला व अबला नाम की दो अलौकिक शक्तियां प्रदान की थीं। इनके प्रभाव से उन्हें पूरे वनवास काल में भूख, प्यास व थकान नहीं हुई और न ही भगवान लक्ष्मण जी को नींद आई। इन शक्तियों ने ही इनकी रक्षा की क्योंकि वनवास काल में बीहड़ जंगलों में जहां राक्षसों में और जंगली जानवरों का प्रकोप था, वहां सुरक्षित 14 वर्ष बिताना साधारण मनुष्यों के लिए संभव नहीं था। इतना ही नहीं गुरु विश्वामित्र ने



गुरु विश्वामित्र द्वारा प्रदान शक्तियों ने ही भगवान श्रीराम व श्री लक्ष्मण की रक्षा की थी



लाए संजीवन लखन जियाए

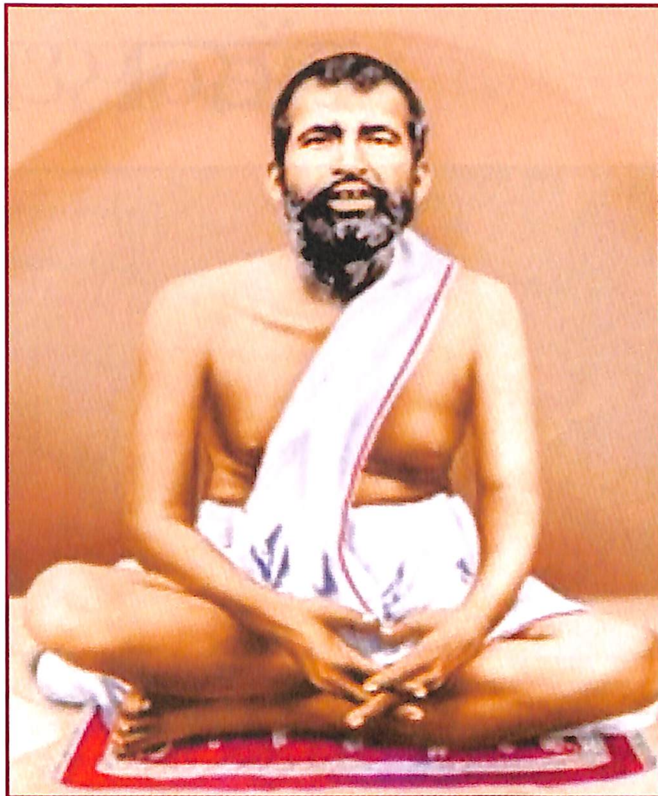
इन्हें कई अलौकिक अस्त्र-शस्त्र प्रदान किए थे। गुरु के द्वारा दिए गए इन संसाधनों ने ही भगवान श्रीरामचन्द्र जी की वनवास काल में रक्षा की थी, जो असत्य कथन नहीं है। जिन भगवान हनुमान जी ने भगवान श्रीरामचन्द्र जी को रावण से हुए युद्ध में सहायता की उन्हें भी गुरु के रूप में पूजा जाता है-

जय जय हनुमान गुसांई कृपा करो गुरुदेव की नाई।

भगवान हनुमान जी ने संजीवनी बूटी लाकर भगवान श्री लक्ष्मण जी के प्राण बचाए थे। आराध्य देव होते हुए भी भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने इनसे भगवान श्री लक्ष्मण को मेघनाद द्वारा मारी गई वीरघातिनी शक्ति के प्रहार से रक्षा करने की प्रार्थना की थी। यहां धागे का रक्षासूत्र तो नहीं था लेकिन शब्दों का रक्षासूत्र था जिसकी लाज भगवान हनुमान जी ने रखी थी। गुरु का वचन ही मंत्र और रक्षासूत्र का स्वरूप होता है।

इतिहास में ऐसे कई उदाहरण हैं जिनके द्वारा गुरु की महिमा के विषय में जानकारी मिलती है जिसके द्वारा ऐसे शक्तिशाली शिष्यों को प्राकट्य हुआ जो विश्वप्रसिद्ध हैं। जब-जब देश व समाज को विपत्तियां घेर लेती हैं तब-तब सद्गुरु अपनी साधना के पुण्यों का प्रयोग करके किसी माध्यम को प्रकट करते हैं जो तारणहार बन जाता है। भारतवर्ष के इतिहास में गुरु कौटिल्य चाणक्य का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। जब देश पर विलासी नन्द का राज्य था और भारत कई टुकड़ों में बंटा हुआ था तब विदेशी इस सोने की चिड़िया को लूटने के लिए तैयारियां कर रहे थे। उस समय देश और समाज की रक्षा करने की चिन्ता में गुरु चाणक्य ने एक साधारण क्षत्रिय युवक की खोज की, उसे अपनी समस्त साधनाओं और विद्याओं का अमृत पिलाकर इतनी शक्ति प्रदान की कि उसने विदेशी आक्रान्ताओं को तो भारत से खदेड़ा ही था बल्कि एक छत्र साम्राज्य की स्थापना भी की थी। इस महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य को रक्षासूत्र बांधकर आशीर्वाद ग्रहण किया था और दीक्षा ग्रहण की थी।

समर्थ गुरु रामदास द्वारा दीक्षित मराठा वीर शिरोमणि छत्रपति शिवाजी ने समूचे मराठा क्षेत्र को एक सूत्र में पिरोकर मुगलों पर विजय प्राप्त की थी। गुरु शिष्य परंपरा का निर्वहन करते समय गुरु शिष्य को अपनी मर्यादा और सम्मान की गरिमा का आदर करने का वचन लेता है तो शिष्य गुरु को रक्षासूत्र बांधकर विपत्तियों से रक्षा करने का वचन लेता है। जब-जब छत्रपति शिवाजी विपदाओं में फंसे तब-तब उनके गुरु समर्थ रामदास ने अपने युक्ति रूपी मंत्रों व दिशा निर्देश के द्वारा उनकी रक्षा की थी। इनमें छापामार युद्धों की प्रेरणा मुगलों की कैद से फरार होना, अन्य मराठा क्षत्रपों को एक सूत्र में बांधना आदि





गुरु रामकृष्ण परमहंस की अद्‌भुत परीक्षा में उत्तीर्ण हुए शिष्य स्वामी विवेकानंद

प्रमुख है। समर्थ गुरु रामदास जी का अशरीरी प्रारूप हमेशा ही छत्रपति शिवाजी का रक्षक बन कर रहा।

प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य विश्व प्रसिद्ध शिष्य, स्वामी विवेकानन्द के बारे में कौन नहीं जानता। कुशाग्र बुद्धि बालक नरेन्द्र को दीक्षित करके स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने स्वामी विवेकानंद नाम दिया। स्वामी विवेकानंद को जो भी अपने सद्‌गुरु से प्राप्त हुआ वह कड़ी परीक्षा से गुजरने के बाद संभव हुआ। गुरु रामकृष्ण परमहंस को अंतिम समय में कई प्रकार की व्याधियों ने घेर लिया था। वे इतने अशक्त हो गए थे कि बिस्तर से उठकर शौचादि के लिए भी नहीं जा सकते थे। उनके मुंह से निकलने वाले कफ और थूक से उनका शरीर गंदा हो जाता था। अब प्रश्न यह उठता है कि जो सद्‌गुरु अपनी ही व्याधियों से स्वयं की रक्षा नहीं कर सकता है तो वह शिष्य की रक्षा कैसे करेगा। यह सद्‌गुरु की लीला है न कि उनकी दुर्दशा। सद्‌गुरु इस तरह से अपने शिष्य की परीक्षा लेते हैं। जो इस परीक्षा में सफल होते हैं उन्हें गुरु की कृपा व आशीर्वाद प्राप्त हो जाता है। केवल स्वामी विवेकानंद ही अपने गुरु की गन्दगी को साफ करते थे जबकि अन्य शिष्यगण नाक-भौं सिकोड़ते थे। सद्‌गुरु ने सभी शिष्यों की परीक्षा ली जिसमें केवल स्वामी विवेकानंद ही उत्तीर्ण हुए। गुरु रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें सुपात्र जानकर अपनी सारी आध्यात्मिक धरोहर सौंप कर आशीर्वाद प्रदान किया। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर देश में स्वामी विवेकानन्द के माध्यम से प्रतिष्ठित हुआ। इस गुरु भक्त को गुरु द्वारा प्रदान किया आध्यात्मिक ज्ञान और शक्ति ने रक्षक की भूमिका निभाई। अमेरिका जैसे देश में जहां उन्हें जानने वाला कोई भी नहीं था और उनके पास खाने तक का भी साधन नहीं था। केवल गुरु की शक्ति व आशीर्वाद ने ही उनकी रक्षा की। स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु की प्राणपण से सेवा, अनन्य भक्ति और निष्ठा के प्रताप से ही दिव्य अलौकिक शक्तियां प्राप्त कीं। जिनके बल पर निर्भय होकर विश्व में भारतवर्ष का नाम रोशन करने में सफल हुए।

रक्षाबंधन के इस पावन पर्व पर हम सांसारिक रीति-रिवाज को तो अवश्य निभाएं क्योंकि समाज द्वारा निर्धारित मानदंडों का पालन करना प्रत्येक का कर्तव्य है लेकिन साथ ही इसके सत्य संदेश का भी पालन करें। हमें अपने वास्तविक रक्षक की शरण में जाना चाहिए और उसे ही रक्षासूत्र बांधकर आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए। गुरु भक्ति गुरुसेवा और गुरु के प्रति अनन्य निष्ठा से ही महान व्यक्तित्व का निर्माण होता है। □

लंदन धाम





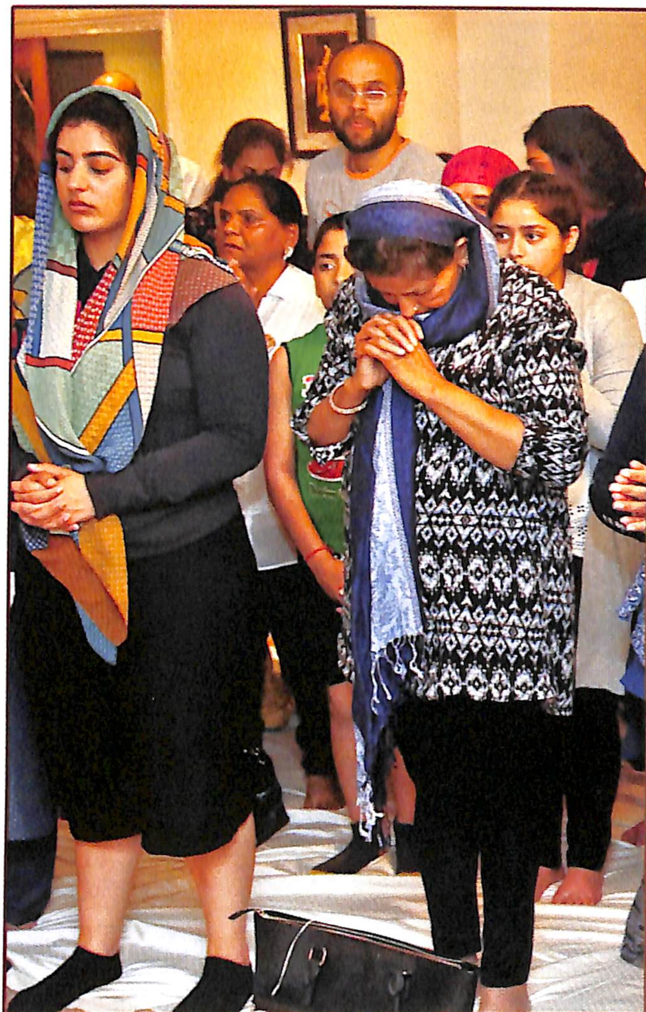






में सत्संग







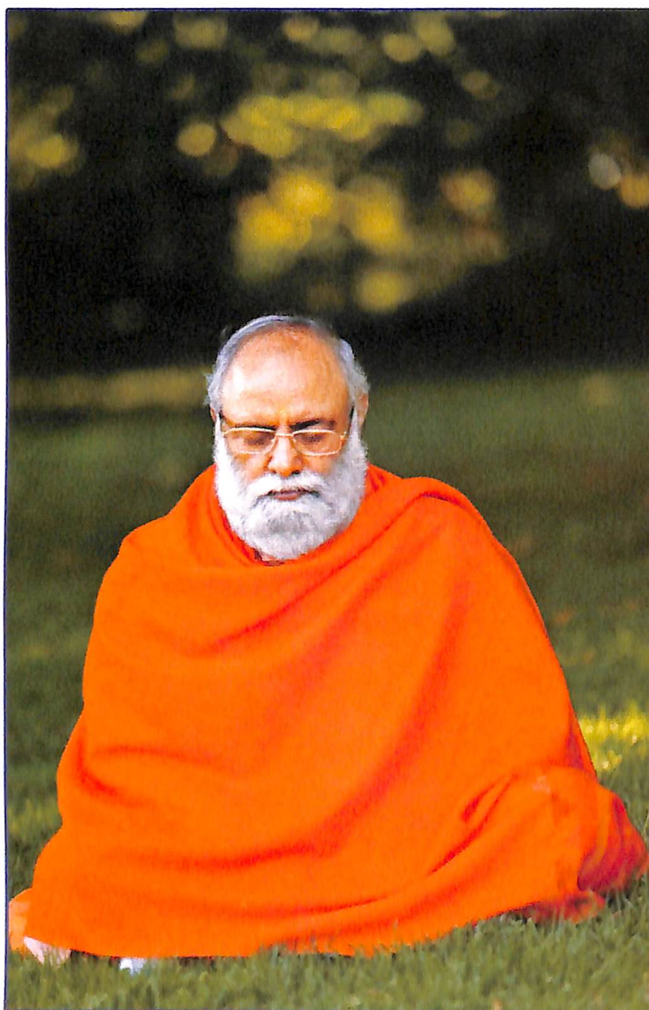




गुरु के संग,











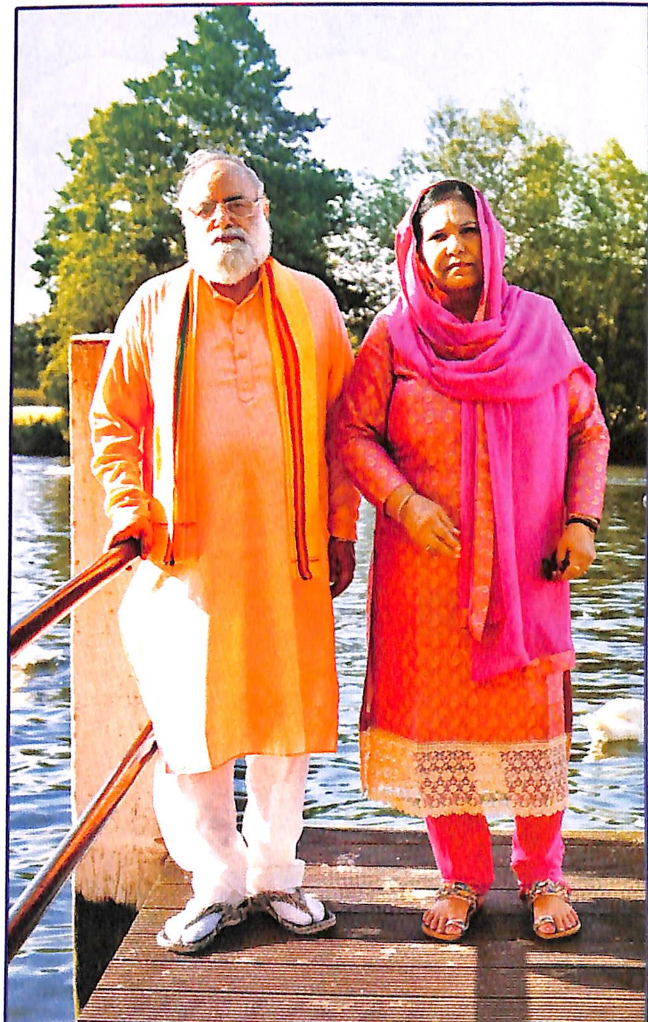
प्रकृति के रंग











प्रभु कृपा
दुख निवारण समागम

16-17 अगस्त (सायं 4 बजे)

कामराज मैमोरियल हॉल नं. 492, अन्ना सलाए
जैमिनी फ्लाई ओवर के पास, तैनामपत वैस्ट, चैन्नई

26-27 अगस्त (सायं 4 बजे)

कालका बड़ी रोड, पपलोहा
कालका, हरियाणा

9-10 सितम्बर (सायं 4 बजे)

नई अनाज मंडी, कचहरी के सामने
यमुनानगर, हरियाणा

23-24 सितम्बर (सायं 4 बजे)

बड़ी ब्राह्मणा, पुलिस चैक पोस्ट के पास
नेशनल हाईवे, जम्मू

विश्व विख्यात अरिहंता इंडस्ट्रीज़ के अद्भुत आयुर्वेदिक उत्पाद



Be Fresh



Finedent



Nt gas


Diab-Z



Nil Stone



Motapa Mukti



Roop Chaya



Livnu



Menstronil



Allerex



Immune Power

For online order : www.arihanta.net

दुखों से मुक्ति

पृष्ठ नं. 30-31 में प्रकाशित दुख निवारण समाचार में जिन भाई-बहनों के अनुभ

असाध्य रोग से पीड़ित बच्चा ठीक हो गया

Bhagwan Shree Lakshmi Narayan
Dham.

UJWAL SINGH — 14 years
DOB: 02-NOV-2001
Thane

1. Till the Age of 5 to 7 years → Did not Speak
   IQ → 75 to 80
2. Now Speak fluently English & Hindi
3. Studying in class III
4. IQ → 117 (NOW)

Address: 102 Valentine
Hiranandani Estate Thane
Patlipada
Thane-W 400607

राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान
(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार)
NATIONAL INSTITUTE FOR THE MENTALLY HANDICAPPED
(Ministry of Social Justice and Empowerment, Govt. of India)

PSYCHOLOGICAL REPORT

Name: Ujjwal Singh — Regn. No.: 993/05
Sex: Male — Date of Testing: 14/6/07
Age: 7yrs - 11M
Psychological Tests Administered: Binet-Kamat Test of Intelligence
Test Results: Mental Age = 6yrs - 4M
IQ: 80 (Eighty)
Percentage of Disability: 25%
Impression: Borderline Intelligence

THIS TEST FINDINGS ARE ALSO BASED ON CASE HISTORY, DEVELOPMENTAL MILESTONES, BEHAVIOURAL OBSERVATION AND INFORMATION GIVEN BY THE PARENTS

Signature
Clinical Psychologist

यूरिन के रोग से

नमो नारायण
मेरा नाम गुरचरन राम मुलतान... का
रहता हूं और मेरा अनुभव है कि मेरे बाथरूम की बड़ी समस्या थी
और मैंने चंडीगढ़ पी जी आई से ओपरेशन भी करवाया परन्तु कुछ
बाद वही समस्या फिर से शुरू हो गई जब मैंने पी जी आई चंडीगढ़
तो डाक्टर ने मेरे को बोला के अब ओपरेशन होगा उसके बाद
आप बेड से उठ नहीं पाओगे मैं उसके बाद मैंने धाम
किया और अब मैंने कोई ओपरेशन भी नहीं करवाया और
मैं ठीक हूं नमो नारायण
गुरचरन

Balanitis Xerotica Obliterans
with meatal stenosis

प्रभु कृपा से तीस साल पुरानी कब्ज हुई समाप्त

ओम नमो नारायण
30 वर्ष पुरानी कब्ज से मुक्ति
लाइलाज रोग से

मेरा नाम रमेश भाटिया सुपुत्र स्वर्गीय श्री पृथ्वी राज जी भाटिया है। मैं 34, लुधरा कालोनी, नि. पहाड़ी गेट बटाला - 143505, शहर जिला गुरदासपुर पंजाब निवासी हूं। मेरे अनुभव मेरे खुद की और मेरी पत्नी को ले कर हैं। Matric 1977 में पास की तब से मुझे गैस एवम कब्ज जैसी ला इलाज बिमारी ने घेर लिया। मैंने इस के लिए बटाला के MBBS Dr ACHRAJ LAL जिन का Clinic CITY ROAD

...न लगती। गैस, सिर दर्द से बदतर से बदतर हाल होता। फिर अमृतसर से 2005 में 29 जून को महासमागम जो दुर्गियाणा मन्दिर में हुआ वहां से श्रीमन नारायण के मन्त्रों की कृपा ग्रहण की और मेरा उपाय हुआ अर्थात अब कब्ज जैसी लाइलाज बीमारी नहीं है उपरोक्त जितने Drs और MEDICINES का उल्लेख किए अब उनमें (TOUCH) भी नहीं है। परम पूज्य गुरुदेव श्री भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश, मां वैष्णो देवी को धन्यवाद। इन के श्री चरणों में मेरी विनम्र प्रार्थना है कि ऐसी ही कृपा सब पर बनाए रखें।

ओम नमो नारायण

विनय.
रमेश भाटिया
34, लुधरा कालोनी
नि. पहाड़ी गेट बटाला
143505 जि. गुरदासपुर (पंजाब)
BATALA - 143505
(GSP Pb.)

के साक्षात प्रमाण

दिए गए हैं, प्रस्तुत है उनके लिखित अनुभव, मेडिकल रिपोर्टें तथा अन्य दस्तावेज

मिली पूर्णतः मुक्ति

Admission No. 55762

NEHRU HOSPITAL
POSTGRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL EDUCATION AND RESEARCH CHANDIGARH-160 012 (India)
नेहरू चिकित्सालय
स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चण्डीगढ़
DISCHARGE AND FOLLOW-UP CARD (R)
चिकित्सालय से छुट्टी प्राप्त करने तथा पुन: परीक्षण हेतु बुलावे का पत्र

CLINIC NAME AND No.	UROLOGY
C.R. No.	A02 2755
NAME	GURCHARAN
AGE	45 M
BLOOD GROUP	
INCOME	
DATE OF ADMISSION	(i) 9/4/06
DATE OF DISCHARGE	(i) 11/04/06
CONSULTANT	Dr Santosh Kumar
SERVICE UNIT	Urology and Neurology

पाठ से कोढ़ी जैसी त्वचा निखर गई

ORTHOPAEDIC & FRACTURE CLINIC
A-34, Vasant Vihar, Near Subzi Mandi (Old A.R.T.O. Lane), Delhi Road, Saharanpur. Ph. : 0132-2725297

Dr. Himanshu Kumar
M.B.B.S., D.Orth.
Orthopaedic Surgeon

डा० हिमांशु कुमार
एम.बी.बी.एस., डी. ऑर्थो
हड्डी जोड़ रोग विशेषज्ञ

Asha Rani A-47 years F
Dated: 14/8/13

EMERGENCIES ATTENDED 24 Hrs.

प्रोस्टेट कैंसर से मिली मुक्ति

P. D. HINDUJA NATIONAL HOSPITAL & MEDICAL RESEARCH CENTRE
(Established and managed by the National Health & Education Society)

DEPARTMENT OF LABORATORY MEDICINE
RIA

NAME THAKAR MAGANLAL
DATE 25/11/2011 LOCATION OPD
REFERRED BY DR. MUKESH SHAH

Test	Result	Units	Status	Reference Range
Prostate Specific Antigen (PSA) (Third Generation)				

DR. VIPLA PURI
Consultant RIA

मैं मगनभाई ठाकर ईडर गुजरात से आया हूँ। मैं ने १८ डिसम्बर २०१० बम्बई में पूज्य गुरुदेव के प्रभुकृपा दुःख निवारण समागम में लिए दिव्य बीज मंत्रों का जप नियमित करता था। अगस्त २०११ में मेरी तबियत अचानक खराब हुई। मैं ने सुरत की दो हॉस्पिटल में इलाज करवाया। मेरा युरिन बंध हो गया था। मेरी बिमारी इतनी गंभीर थी कि डॉक्टर ने मेरा प्रोस्टेट का ओपरेशन निश्चित किया। पूज्य गुरुजी का बीज मंत्रों का सतत जप करने से डॉ. कुमार नायक ने रीपोर्ट निकालकर ता. २८-८-२०११ के दिन मेरा प्रोस्टेट का ओपरेशन किया। ओपरेशन सफल हुआ। लेकिन बायोप्सी रीपोर्ट ता. ६-९-२०११ के दिन आया उसमें प्रोस्टेट कैन्सर का निदान हुआ। हम सब चिंतित हुए। हमने दिव्य बीज मंत्रों का जप शुरू किया। सुरत में होल बोडी स्केन करवाया वह रीपोर्ट नोर्मल आया। और बम्बई में जाकर हिन्दुजा अस्पताल में ता. २५-११-२०११ के दिन बोन स्केन का रीपोर्ट करवाया वह रीपोर्ट नोर्मल आया। आज मैं गुरुकृपा से स्वस्थ हूँ। मैं पूज्य गुरुदेव को कोटि कोटि प्रणाम करता हूँ। गुरु माँ को भी मेरा कोटि कोटि प्रणाम। पूज्य गुरुदेव हमारे उपर कृपा बनाये रखें।

॥ ॐ नमो नारायण ॥

मगनभाई जी. ठाकर
कडियादरा ता. ईडर
जि. साबरकांठा
उत्तर गुजरात

पाठक कहिन

मिलता है सद्ज्ञान का प्रकाश

प्रभु कृपा पत्रिका सांसारिक रस्मों रिवाज व अच्छे चाल-चलन, चरित्र के बारे में ज्ञान तो देती ही है साथ ही अलौकिक ज्ञान भी प्रदान करती है। इस पत्रिका में प्रकाशित परम पूज्य गुरुदेव श्री ब्रह्मर्षि कुमार स्वामी जी के प्रवचनों से यह ज्ञान मिलता है कि मनुष्य भौतिक सुखों को भोगते हुए कैसे अध्यात्म की ओर जाता है। पत्रिका में स्पष्टरूप से विवेचन किया जाता है कि धर्म, अर्थ, काम को भोगते हुए कैसे मनुष्य मोक्ष की ओर जा सकता है। गृहस्थ का पालन करते हुए भी गृहस्थी प्रभु भजन में मन लगा सकता है यह पत्रिका के माध्यम से सद्ज्ञान का प्रकाश होता है।

हरिशंकर पाण्डे, कानपुर, उ.प्र.

करती है भ्रांतियों का खण्डन

प्रभु कृपा पत्रिका के माध्यम से हमारे समाज में व्याप्त भ्रांतियों का खण्डन किया जाता है। पत्रिका में हमारे धार्मिक त्यौहारों में प्रचलित रीति-रिवाजों के बारे में वास्तविक तथ्य पत्रिका में प्रस्तुत किए जाते हैं। हर त्यौहार के पीछे जो कथा है उसे उद्घाटित करके लोगों को जो जानकारी दी जाती है, वह एक सराहनीय कार्य है। मंदिरों के इतिहास व उनसे संबंधित देवताओं या देवी के बारे में सुरुचिपूर्ण लेख पढ़ने को मिलते हैं जो ज्ञानवर्धन के साथ ऊर्जा भी प्रदान करने वाले हैं।

रमा वैष्णवी, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

ज्योतिष के गहन विषयों की व्याख्या

प्रभु कृपा पत्रिका में ज्योतिष विषय पर पत्रिका द्वारा जो लेखमाला छापी गई थी उससे पाठकों की ज्योतिष संबंधी जिज्ञासाओं की पूर्ति हुई। इसके पश्चात् भी कई लेख छपे जैसे-रंगों के अनुसार मानव स्वभाव और विशेष तौर पर कालसर्पयोग पर छपा लेख बहुत पसंद आया। इस तरह के लेखों का प्रकाशन जानकारी तो देता ही है साथ ही हमारी उन भयजनित विचारों को भी खत्म करता है जो हमारे अज्ञान के कारण पैदा होते हैं। भविष्य में भी इस प्रकार की रचनाओं की आशा करता हूं।

भानुदत्त कौशिक, लखनऊ, उ.प्र.

सामाजिक जागरण का सफरनामा

प्रभु कृपा पत्रिका को मैं बहुत अर्से से पढ़ता हूं। शायद मैं इसका पुराना व प्रारंभिक पाठक भी हूं। मैंने जो महसूस किया है उसे अपने शब्दों में पेश करने के लिए इतना ही कह सकता हूं कि पत्रिका ने आज तक का जो सफर तय किया है उसमें पूर्णत: समाज को जगाने का कार्य किया है। इस पत्रिका ने सामाजिक मूल्यों को जिस तरह से पाठकों को समझाया है और दिलो-दिमाग में उतारा है वह बहुत वंदनीय कार्य है। पत्रिका ने सामाजिक चेतना के लिए जो भूमिका निभाई है उसके लिए मैं शत्-शत् नमन करता हूं।

रोशन लाल खत्री, नरेला, दिल्ली

विश्व बंधुत्व की पैरोकार

प्रभु कृपा पत्रिका पूरे विश्व को एक ही मानते हुए जो विश्वबंधुत्व का संदेश देती है, यह आज की जरूरत है। जैसा कि धर्म के नाम पर हिंसा हो रही है और इंसान एक दूसरे की गर्दनें काटने को तैयार है, यह पत्रिका इंसानियत का सबक दे रही है। गुरुदेव ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी स्पष्ट रूप से इस पत्रिका के माध्यम से संदेश देते हैं कि धर्म एक ही है और और परमात्मा भी एक है। परमात्मा कभी खुश नहीं होता कि उसकी एक संतान दूसरे की गर्दन काटे। यह पत्रिका विश्व बंधुत्व की पैरोकार है और मैं इसे सलाम करता हूं।

राम गोपाल, मुरादाबाद, उ.प्र.

प्रत्येक आयुवर्ग को सद्ज्ञान

प्रभु कृपा पत्रिका बच्चे, जवान व वृद्ध सभी के लिए समानरूप से सद्ज्ञान प्रदान करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हर आयुवर्ग के लिए जीवन को जीने की कला के लिए दिशा निर्देश दिया जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी जीवन के लिए जरूरी होता है जो यह पत्रिका प्रदान करके अपनी महती भूमिका निभा रही है।

रमा भूटानी, रूप नगर, दिल्ली

परिभाषित करती है मानवीय रिश्तों को

प्रभु कृपा पत्रिका अन्य विषयों पर तो लिखती ही है लेकिन जैसा कि मैं महसूस करता हूं, यह मानवीय रिश्तों को मुखर होकर परिभाषित करती है। पूज्य गुरुदेव जी के प्रवचनों में सामाजिक रिश्तों को कैसे सम्मान दिया जाए और एक दूसरे के प्रति मानवीय संवेदनाओं के मूल्यों पर विस्तृत रूप से कहा जाता है। पत्रिका इसे पूरी ईमानदारी से प्रकाशित करती है।

सुखवीर सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.

कल्पतरु के अनुभव

हाथ का सर्वाइकल ठीक हुआ

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, मेरे बांए हाथ में सर्वाकल का दर्द रहता था। थैरेपी करवा रहा था लेकिन कोई आराम नहीं आ रहा थां मैं जब दर्द निवारक दवा खा लेता था तो कुछ समय के लिए दर्द ठीक हो जाता था लेकिन दवा का असर खत्म हो जाने के बाद दर्द फिर उभर जाता था। इस परेशानी में एक दिन मुझे मेरी पत्नी ने भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की शरण में जाने के लिए कहा। मैं संत निरंकारी कालोनी में लगातार एक महीने तक आता रहा और इनकी कृपा से केवल व्यायाम करने से ही यह सर्वाइकल ठीक हो गया।

दिनेश वर्मा, नजफगढ़, दिल्ली

ठीक हुआ मानसिक रोग

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, मेरी बहन की लड़की मानसिक रोग से ग्रस्त थी। वह बहुत भयभीत रहती थी। जब मुझे इस रोग का पता लगा तो मैं उसे लेकर संत निरंकारी कालोनी में भगवान श्री अक्षय कल्पतरु के पावन स्थान पर आई और अर्जी लगाई। 21वें दिन उसमें न जाने कहां से आत्म विश्वास आ गया और उसके बाद तो वह ठीक होती चली गई। यह भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की कृपा से हुआ है।

निशा आहूजा, रोहिणी, नई दिल्ली

घर की कलह खत्म हुई

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, हमारी ज्वाइंट फैमिली है। कई महीनों से देवर की शादी के बाद घर का माहौल खराब चल रहा था। मैं संत निरंकारी कालोनी में भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की शरण में आई। मैंने यहां आकर अपनी व्यथा कही और पाठ किया। मैं सप्ताह में दो बार ही आ पाती थी। एक महीने के अंदर-अंदर मेरे घर में शान्ति हो गई। यह भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की कृपा से हुआ है।

रमा देवी, सोनीपत, हरियाणा

रात का डर खत्म हुआ

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, मेरा छोटा बेटा जो अभी 9 साल का है रात में सोते हुए डर जाता था। वह इतनी जोर-जोर से चिल्लाता था और रोता था कि कई बार तो पड़ोसी भी हमारे घर आ जाते थे। मैंने मनोचिकित्सक को भी दिखाया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मैं बहुत आशा से संत निरंकारी कालोनी में आई और बेटे के लिए प्रार्थना की। साथ में मैं अपने बेटे को भी लाई थी। मैं लगातार रोज सुबह बेटे को लेकर 40 दिन तक आई। इसी बीच मेरे बेटे ने चिल्लाना तो बंद कर दिया लेकिन वह चौंक जाता था। इसके बाद मैं 20 दिन तक उसे यहां लाती रही और अब वह बिल्कुल ठीक है। अब भी मैं उसे सप्ताह में एक दिन जरूर लेकर आती हूं। परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

बरखा सिंह, झड़ौदा, दिल्ली

बेटे को मिली नौकरी

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, मेरे बेटे ने एमसीए की थी और वह एक अच्छी नौकरी की तलाश में था। न जाने कौन सा ग्रह-नक्षत्र आड़े आ रहा था कि उसे अच्छी नौकरी तो क्या कोई काम चलाऊ नौकरी भी नहीं मिल रही थी। एक दिन मुझे निरंकारी कालोनी के भगवान श्री अक्षय कल्पतरु के बारे में पता लगा तो मुझे उम्मीद की किरण नजर आई। मैंने उसे समझाया कि तुम एक बार मेरे साथ वहां चलो। वह मेरे साथ वहां गया और पूजा-पाठ करके मुझे कहने लगा कि मम्मी मुझे बहुत शांति मिल रही है। वह अपने आप ही यहां लगातार एक महीने तक यहां आता रहा और नौकरी की तलाश भी करता रहा। एक दिन जब वह नोएडा की एक कंपनी में इंटरव्यू देकर आया तो बहुत खुश था। उसने बताया कि मुझे यह नौकरी मिल जाएगी। और हुआ भी ऐसा ही कि उसे वह नौकरी मिल गई, वह भी अच्छी तनख्वाह के साथ। यह भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की कृपा से ही संभव हुआ है।

सुधा तोमर, संत नगर, दिल्ली

सीए की परीक्षा में मिली सफलता

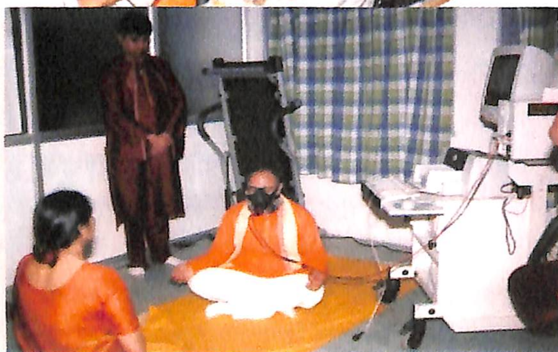
परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, मैं हमेशा से ही एक औसत दर्जे का विद्यार्थी रहा हूं। हालांकि फस्ट डिवीजन तो आती ही रही है लेकिन टॉपर स्थिति कभी नहीं रही। मुझे मां ने निरंकारी कालोनी में अर्जी लगाने के लिए कहा तो मैं यहां और विधिवत् पूजा-पाठ करके कलावा बांधा तथा भगवान श्री अक्षय कल्पतरु से प्रार्थना करके अर्जी लगाई। इसके परिणामस्वरूप मैं अच्छी पोजीशन में सीए की फाइनल परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। मैंने सभी समैस्टर क्लीयर कर लिए। यह भगवान श्री अक्षय कल्पतरु की कृपा से ही संभव हुआ है।

अमित सैनी, कुशक, दिल्ली

Under the Scrutiny of Science







On the occasion of the 18th Prabhu Kripa Dukh Nivaran Convention, scheduled to be held on 13th-14th December 2003, in the city of Bangalore, a press conference was organized two days prior to the convention. There, by sheer coincidence I met the director of the renowned Vivekananda Research Institute, who was well aware of the unique, divine powers of Gurudev. During discussions, he said, "Giving a complete diagnosis of the patient just by looking at the photograph shows the elevated status of Gurudev's divinity." He went on to say, "A seminar is being organized in the Institute on 18th December. The topic to be discussed is, *Science & Spirituality*." He also told us that several scientists and intellectual personalities would participate in the seminar. He said, "Gurudev's holiness and divinity have reached great heights. His extraordinary divinity would be a viable subject for a debate in the field of science. They want to invite Gurudev for the seminar, and this would enable a scientific analysis of his divine abilities, the results of which would be put forward to the panel of scientists and other intellectuals in the seminar." When I discussed the proposal with Gurudev, his response was gentle, and he accepted the proposal, understandingly.

On 17th December, Gurudev along with a few volunteers reached Vivekananda Institute. Scientific analysis of Gurdevji began in several scientific laboratories like Revoked Potential, Metabolic Analyzer etc. Gurudev was requested to attain a highly elevated spiritual state of mind in meditation. The results that started to emerge were nothing short of startling.

Gurudev's body was connected to several machines. The results and analysis of the experiments were continuously under the acutely focused scrutiny and mental scanner of several scientists. After some time, the scientists were surprised to see that, Gurudev's heart was beating at a normal pace, but the breathing rate was below normal. His mind had achieved an



extreme state of sensitivity. This led one of the scientists to make a declaration which shocked everyone. "Gurudevji has left his body," he stated confidently.

Scientists started to check the pulse rate of Gurudev. It was missing, or non-existent! They increased the sensitivity of their machines, but in vain. They could still not detect any pulse. After a lapse of some time, Gurudev came back into a normal state of being, of his own accord. His pulse returned to normal, once again.

With the results of Revoked Potential, scientists concluded that Gurudev's mind works at a greater speed than a normal human being's mind. And during meditation, the sensitivity of Gurudev's mind reached a state of inexplicable elevation. His power and ability to grasp was innumerable times higher than that of any normal human being.

After all the proceedings of the experiments came to an end, scientists concluded, "We have done these sensitive experiments on many spiritual Gurus. But undoubtedly, the experiments done on Gurudev can be witnessed only once in a lifetime. Descriptions about saints can be read in holy books and scriptures. It is indeed surprising, yet very heartening to know, saints like Gurudev still exist in this world".

A little later, Gurudev was requested to take a seat in a big hall. There were 18 patients sitting in the hall. Their complete diagnosis was readily available with the doctors. Every one present was amazed to note that Gurudev saw the patients

only for seconds and then gave their complete diagnosis in detail. Gurudev's diagnosis tallied with the diagnosis and details of other information available with the doctors.

One unique incident occurred. After simply looking at a lady, who came from abroad, Gurudev said, "You are infected with a deadly disease, which you haven't disclosed to anyone. The lady said, "No, I am not infected with any such disease." Gurudev then said to her, "Shall I tell you about disease you have contracted, in public?". After getting no reply from her, Gurudev spoke to her earnestly, but in a quiet, sober tone. "You have AIDS".

After listening to Gurudev, the lady broke down sobbing profusely. Gurudev then continued saying, "Don't worry, I will communicate with God for you."

After the emergence of such positively conclusive results and reports, a huge discussion ensued in the seminar on the importance of '*Spirituality in Modern Times.*' □

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के केन्द्र (सत्संग समय प्रातः 11 बजे)

दिल्ली

- सी-27, ग्रेटर कैलाश एन्क्लेव-1, नई दिल्ली-48, फोन : 11-41639067-69, 46772250-54, 65577933-37, 26241880, 81, 83, 84

पंजाब

- कोठी नं. 533, फेस-1, फ्रैंको होटल के पीछे, मोहाली
- 212, छोटी बारादरी, फेस-2, बस स्टैंड के पास, मेडिकल कालेज के सामने, जालंधर
- हुंडल पैलेस बिल्डिंग, डायमंड एवेन्यू, मजीठा रोड, धींगरा पैट्रोल पंप गली के सामने, अमृतसर
- 1565-डी, मॉडल टाउन एक्सटेंशन, अरोड़ा पैलेस के पास, दाना मंडी, लुधियाना
- मोहाली एक्सप्रेस वे, बाईपास, खंगूरा-पलाही चौक, खंगूरा, फगवाड़ा
- कोठी नं. 408/6, रुलिया राम कालोनी, पुराने चर्च के पास, सिविल लाइन, गुरदासपुर
- गांव अब्दुल्लापुर, तहसील मुकेरियां, जिला होशियारपुर
- डलहोजी रोड, चिंतपूर्णी मेडिकल कालेज के पास, बुंगल, पठानकोट
- भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम, ज्वांडा रोड-सुनाम जिला संगरूर
- जिरा रोड, सतिया वाला बाईपास के पास, फिरोजपुर कैंट
- 169, सैक्टर-36ए, चंडीगढ़
- भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम मंदिर, वार्ड 15, स्टेशन मंडी, रेलवे स्टेशन के पास, कुराली, जिला मोहाली
- ग्लोबल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के पास, चुनार बाग, पटियाला
- प्राचीन शिव मंदिर, शिव एंक्लेव, पीर बाबा रोड के पास, बल्टाना जिरकपुर

हरियाणा

- प्रभु कृपा महाशक्तिपीठ जी.टी. रोड, मोहड़ी रेलवे स्टेशन के पास, तहसील शाहबाद, मोहड़ी, जिला कुरुक्षेत्र
- मकान नं. 21, वीर नगर, गुप्ता पेट्रोल पंप के पीछे, यमुना नगर
- आर 4, गर्वमेंट गर्ल्स स्कूल के पास, माडल टाऊन, पानीपत
- कोठी नं. 2, जगत कालोनी, भिवानी
- 167, सैक्टर-21ए, एशियन हॉस्पिटल के पास, फरीदाबाद
- गांव नग्गल (मोंगी बंद) सेक्टर-30 के पास, पंचकुला
- पजुवाना गांव, जी.एस. पब्लिक स्कूल के सामने, सिरसा, हरियाणा

उत्तर प्रदेश

- प्रभु कृपा महाशक्तिपीठ चौमुंहा, जीएलए यूनिवर्सिटी के पास, नेशनल हाईवे-2, वृंदावन
- सी पी-12, कोहिनूर प्लाजा, ईश्वर धाम मंदिर के पास, सैक्टर-12, इंदिरा नगर, लखनऊ
- एच.आई.जी.-2, रामगोपाल चौराहा, जरोली फेस-2, बर्रा, कानपुर

मध्य प्रदेश

- हाउस नं. 248, कविता गृह निर्माण सोसाइटी, स्कीम नं. 114, पार्ट 2, इंदौर **(अब नियमित सत्संग यहीं पर होगा)**
- हाउस नं. 138, टिकरी साहिब गुरुद्वारे के पास, नीलकंठ कालोनी, भोपाल
- 93, आदर्श नगर, नर्मदा रोड, जबलपुर

राजस्थान

- ए-79, मनीष मार्ग, गांधीपथ, नेमी नगर, जयपुर
- 5, शक्ति मार्ग, राजस्थान पत्रिका ऑफिस के सामने, श्री गंगानगर
- कृष्णा भवन, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने, सिल्वर जुबली रोड, सीकर
- 23 सी ब्लाक, वार्ड-14, श्रीकरणपुर

हिमाचल प्रदेश

- भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम मंदिर, राजकीय महाविद्यालय के सामने, सरका घाट, मंडी
- डी-25, लेन-1, सैक्टर-2, न्यू शिमला-171009
- बचपन प्ले स्कूल के पास, फोरेस्ट चौक, शमशी, कुल्लू
- तीसरा तल, मित्तल प्लाजा, चंबा घाट, सोलन
- टीकरी गांव, पोस्ट आफिस तंग नरवाना, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा
- रिनॉल्ट एजैंसी के पास, वी.पी.ओ. गुटकर, मंडी
- मकान नं. 80, द्वितीय तल, न्यू हाउसिंग बोर्ड कालोनी, नाल्टी रोड, नया नगत, हमीरपुर
- नगरोटा बगवां, हटवास, जिला कांगड़ा

आंध्र प्रदेश

- मकान नं. 8-2-616/डी, रोड नं. 11, कार्वी सेंटर के पास, बंजारा हिल्स, हैदराबाद

उत्तराखंड

- प्रभु कृपा महाशक्तिपीठ, बहादराबाद, दिल्ली-हरिद्वार रोड, श्री शनिदेव मंदिर के पास, हरिद्वार
- 1035, यादव कालोनी, राम नगर, रुड़की

महाराष्ट्र

- 109-110, जानकी देवी स्कूल रोड, महाडा, वर्सोवा टेलीफोन एक्सचेंज के पास, चार बैंगलो, अंधोरी (वैस्ट) मुंबई-53

पश्चिम बंगाल

- 20/1, तीसरी मंजिल, एम. डी. रोड, रूम नंबर 2, कोलकाता-7
- सूर्यादीप अपार्टमेंट, डॉन बॉस्को मोड़, सिवोकी रोड, पो. सिलिगुड़ी, जिला दार्जिलिंग

जम्मू

- मकान नं. 15/2, सैक्टर-2, त्रिकुटा नगर, जम्मू

बिहार

- चाणक्य प्रा. आई.टी.आई., दीघा आशियाना रोड, डॉन बासको एकेडमी (स्कूल) के पास, पटना
- मां वैष्णों कॉम्प्लैक्स, महावीर हाई स्कूल के पास, एस.पी. रोड, गया

छत्तीसगढ़

- मकान नंबर-79, अरिहंत नगर, सरोना, टोयटा शोरूम के पास, रिंग रोड नंबर 1, रायपुर

सिक्किम

- हाइवे 10, टेनडोंग पेट्रोल पंप के पास, पो. रानीपूल, ईस्ट सिक्किम

कर्नाटक

- 290, 4 मेन, व्यालीकवल हाउस, कॉपरेटिव सोसायटी लि., विनायका लेआउट पार्क के पास, विजया नगर, बंगलुरु

London, United Kingdom

- Little Paddocks Windsor Road, Water Oakley, Berkshire, SL4-5UJ, UK
  Ph. : 0044-1628770041, 1628628683

CANADA

- Bharat Mata Mandir, 8887 The Gore Road, Castlemore, ON L6T 3Y7, Canada, Ph. : 416-890-4606, 416-568-1293, 416-824-5582, 647-219-5199

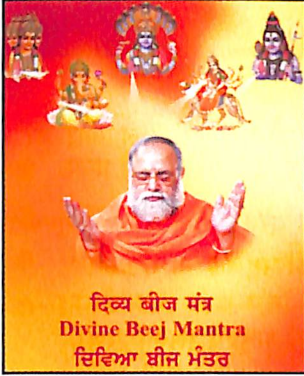
DUBAI

- Flat no 104 , Block - A City Mart Building, 1st Floor, Bur Dubai, Dubai, Ph: No. 0506578916, 0567742987

USA

- 14355 Campbell Hill Road, Bowling Green, OHIO-43402, Ph. : 216-929-4516 , Fax : 786-522-1504

विशेष संदेश



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने दिव्य बीज मंत्र की प्रक्रिया का प्रभु की कृपा से नवीनीकरण किया है। कृपया भाई-बहन सत्संग में उसी नवीन प्रक्रिया का पालन करें। जिन भाई-बहनों ने किसी भी समागम में वह नवीन रूप ग्रहण किया है वे उसके अनुसार पाठ करें परंतु जिन्होंने अभी किसी भी समागम में यह कृपा नहीं ली है, वे समागम में आकर परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से यह कृपा लेने के बाद अपने घर पर उनका प्रयोग करें। इस नवीन प्रक्रिया को कोई भी भाई-बहन किसी को भी प्रदान न करे।

पाठ करने वाले भाई-बहन के परिवार में अगर किसी का जन्म होता है या किसी की मृत्यु होती है जिन्हें शास्त्रों में सूतक काल माना जाता है अथवा माता-बहनों के मासिक धर्म के दिनों की बात भी की जाए तो उपरोक्त स्थिति में भी पाठ करना नहीं छोड़ना, परन्तु उपरोक्त स्थितियों के दिनों में पूजा सामग्री का प्रयोग नहीं करना, पावन पुस्तक को भी नहीं छूना। बगैर इनके पाठ अवश्य करना है।

WORLDWIDE VENUES FOR SATSANG

UK SATSANG PLACES

Little Paddocks Windsor Road, Water Oakley, Berkshire, SL4-5UJ
Every Wednesday & Saturday 5pm.

Coventry, AT7 Centre, 12 Bell Green Road
Coventry, CV6 7GP, Every Saturday 5pm.

Leicester, East West Community Project
10 Wilberforce Road, Leicester, LE3 0GT, Every Saturday 5pm.

Heston Community Sports Hall, Heston Road, Heston,
Middlesex, TW5-0QZ, Every Sunday 5p.m.

Ilford Sports Club,3 Cricklefield Place,Ilford,Essex,IG1-1FY
Every Sunday 5p.m.

Birmingham
St. Albans Community Centre, St.Albans Road, Smethwick,
West Midlands, B67-7NL, Every Sunday 5 p.m.
Contact for UK Ph: 0044-1628770041, 1628628683

USA SATSANG PLACES

California
Sanatan Dharma Kendra, 3102 Landed Ave. San Jose
California 95132 (Every 1st and 3rd Sunday 4 pm Onwards)

New York
Asamai Mandir 45-32 Bowyne St.
Flushing NY 11355 (Every Other Saturday 4.00 pm onwards)

Ohio
14355 Campbell Hill, Bowling Green Ohio 43402
(Every Sunday 12 pm onwards)

Chicago
Ashyana Banquets, 1620 75th Street, Downers Grove, IL 60516
(Every second Saturday) 5.00 pm Onwards

Myrtle Beach
1004 Waccamaw Dr., Conway, South Carolina 29526
(Every Other Sunday 4 pm Onwards)

Virginia
14401 Compton Village Dr., Centerville, Virginia 20121
(Every 1st & 3rd Sunday 3 to 4 pm Onwards)

New Jersey
IGO (Indian Grocery Outlet), 180 Talmadge Road, Edison. NJ 08817
(Every other Sunday) 3.00 to 4.00 pm

Michigan
Shri Shirdi Saibaba Temple of Michigan, 28875, West 7 Mile Road,
Livonia, Michigan, 48152
(Every 2nd Saturday 2 pm Onwards)

Contact for USA Ph: 216-929-4516, 732-494-8500
USA Toll Free No.: 1-855-990-0053, 1-855-990-0054

CANADA SATSANG PLACES

Brampton
Bhawani Shankar Mandir, 90 Nexes Ave. Brampton ON, L6P 3R6

Montreal
3700 Griffiph, Unit No-136, St Lawrence (QC)
Every Saturday 5.30p.m.
Contact for CANADA Ph.: 416-890-4606, 416-568-1293, 416-824-5582, 905-799-9205

UAE SATSANG PLACE

Dubai
Flat No. : 104, Block-A, City Mart Building, Bur Dubai,
Every Friday 4pm, Contact : +97150 4562682, 05065 78916, 05677 42987

KENYA SATSANG PLACE

Nakuru
Every Tuesday 10.00am To 11.00 Am,
Contact: 00254733636200, 00254722686626

GERMANY SATSANG PLACES

Hamburg
Julius-Ludowieg Str 63, 21073, Hamburg Contact : 0049 1636044402, 0049 4064880962

Seligenstadt
TuS 1880, An der Lache 3, 63500 Seligenstadt
Contact : 0049 15203995369,0049 15151031505

ITALY SATSANG PLACE

VIA CAMPAGNAMAGRA, 37068 VIGASIO (VERONA)
Contact : 0039-3298881313, 0039-3336956422

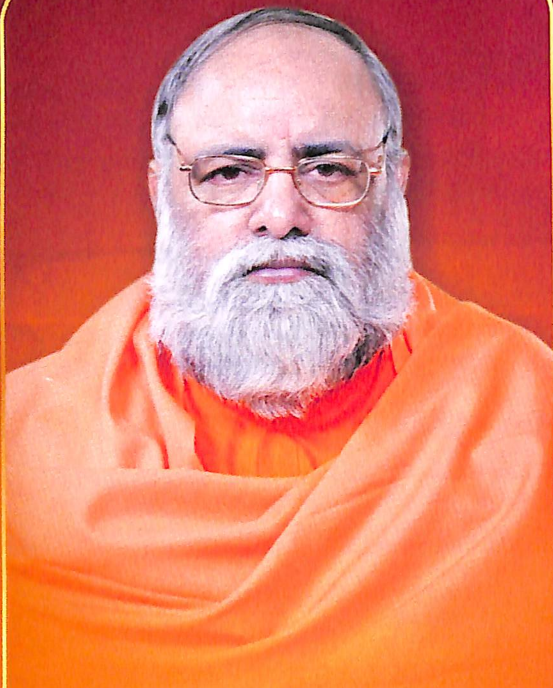
HOLLAND

KAAPSTRAAT 188, 2572 HN, DEN HAAG, THE NEDERLANDS
Contact : 0031-623003548, 0031-616073545

FRANCE

46 Rue Raymond Lapchin 95190 Goussainville, Paris
Contact : 0033-674144622, 0033-649627781

आरती श्री गुरुदेव जी



गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी।
जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी ॥ ॐ जय जय...
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरु मूरत धारी।
वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥ ॐ जय जय...
जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजे।
गुरु बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजे ॥ ॐ जय जय...
माया मोह नदी जल जीव बहे सारे।
नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे ॥ ॐ जय जय...
काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी।
ज्ञान खड्ग दे कर गुरु सब संहारी ॥ ॐ जय जय...
नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें।
सब का सार बताकर गुरु मारग लावे ॥ ॐ जय जय...
गुरु चरणाअमृत निर्मल सब पातक हारी।
वचन सुनत श्री गुरु के सब संशयहारी ॥ ॐ जय जय...
तन-मन धन सब अर्पण गुरु चरनन कीजै।
ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति दीजै ॥ ॐ जय जय...

पत्रिका के सदस्य बनने हेतु

एक वर्ष - 720 रुपए, दो वर्ष - 1400 रुपए, तीन वर्ष - 2100 रुपए, पांच वर्ष - 3500 रुपए

सदस्यता ग्रहण करने के नियमः

- अपना पूरा पता, पिन कोड, मोबाइल/फोन नम्बर, मेल आई डी इत्यादि साफ अक्षरों में भेजें।
- वार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त होते ही तुरंत अगले वर्ष का शुल्क भिजवाएं ताकि आपको समय पर पत्रिका पहुंचाई जा सके।

डी.डी. अथवा मनीआर्डर के साथ यह फार्म अवश्य भरकर भेजें।
अपना चेक, डी.डी. व मनीआर्डर भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के नाम से ही भेजें।

नाम (साफ-साफ अक्षरों में लिखें) ....

उम्र .... पेशा .... पता ....

शहर .... राज्य .... पिनकोड ....

देश .... फोन ....

ई-मेल ....

चेक/डी.डी. अथवा मनीआर्डर का नंबर ....

तारीख .... कितने वर्ष की सदस्यता ली ....

भेजी गई राशि ....

हस्ताक्षर

अगस्त माह की मुख्य तिथियां

7 अगस्त



रक्षाबंधन/पूर्णिमा

14 अगस्त



कृष्ण जन्माष्टमी

15 अगस्त



स्वतंत्रता दिवस

21 अगस्त



अमावस्या

कृपा प्रदान करने वाली पाठ प्रक्रिया

- सबसे पहले प्रतिदिन का पासवर्ड करें। यह केवल एक बार करना है। इसके लिए अपने मोबाइल या कंप्यूटर में फेसबुक या ट्वीटर पर जाकर ekaum को like कर दें तो प्रतिदिन का पासवर्ड आपको मिलने लगेगा।
- परम पूज्य सद्‌गुरुदेव जी ने समागम में जो मंत्र प्रदान किया है उसे पाठ शुरू करने से पहले केवल एक बार करें।
- अन्य किसी भी गुरु ने आपको जो गुरुमंत्र प्रदान किया है उसे दिन में केवल एक बार करना है।
- भगवान श्री गणपति स्तोत्र भास्कर का पाठ केवल एक बार करें।
- श्रीशिवशक्तिकृतम् श्रीगणाधीशस्तोत्रम् का एक बार पाठ कीजिए।
- इसके बाद बीज मंत्रों का पाठ करें। धन के लिए महालक्ष्मी जी का पहला मंत्र एक बार, दूसरा मंत्र 9 बार करें। तन से रोगों की मुक्ति के लिए मां दुर्गा जी का पहला मंत्र एक बार, दूसरा मंत्र 9 बार करें। इसके दूसरे चरण का पहला मंत्र एक बार तथा अगला मंत्र 9 बार करना है। मां सरस्वती की कृपा प्राप्ति का पहला मंत्र एक बार, दूसरा मंत्र 9 बार करें।
- इसके बाद भगवान गणपति, मां लक्ष्मी, भगवान नारायण, सद्‌गुरुदेव जी अथवा अन्य किसी देवी-देवता की आरती एक बार करें।
- ब्रह्मांड रत्न का पाठ एक बार करें। इसे करने से पूर्व इसका पासवर्ड प्रभु कृपा पत्रिका से ग्रहण करें और इसका एक बार पाठ करें।
- इसके बाद आपको समागम में जो पाठ संपूर्ण करने का मंत्र दिया गया है उसे एक बार करें।

पाठ कैसे करें

- प्रात:काल पूर्व दिशा और संध्याकाल में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके पाठ करना है।
- सुबह का पाठ पीला गाउन पहनकर तथा शाम का पाठ सफेद गाउन पहनकर करें।
- वातावरण शुद्ध करने के लिए पाठ के स्थान पर अभिमंत्रित जल छिड़किए।
- प्रभु के समक्ष चन्दन, गुग्गल व लोबान की धूनी दीजिए।
- पाठ के लिए अभिमंत्रित आसन का प्रयोग कीजिए।
- पाठ के समय पुस्तक रखने के लिए रियाल का प्रयोग करें।
- अभिमंत्रित माला के लिए गोमुखी का प्रयोग अवश्य करें।

पाठ के बारे में जरूरी बातें

- प्रत्येक पूजा सामग्री को सवा दो महीने के बाद बदलना अत्यंत आवश्यक है।
- माहवारी के समय भी बहनें सहजता से पाठ कर सकती हैं मगर इस दौरान पूजा सामग्री का प्रयोग न करें। इसी प्रकार सूतक के समय भी
- आप पाठ कर सकते हैं लेकिन पूजा सामग्री का प्रयोग न करें।
- आप ट्रेन, प्लेन अथवा लंबी यात्रा के दौरान भी पाठ कर सकते हैं, यदि आपके पास यात्रा के दौरान पूजा सामग्री नहीं है तो भी आप सहजता से पाठ कर सकते हैं।

वर चाहिए

जन्म तिथि : 4 अप्रैल, 1987
जन्म समय : 6:30 सायं
जाति/गोत्र : अत्री/राजपूत ठाकुर
कद : 5 फुट
शिक्षा : एम.ए., बी.एड.
फोन : 09780365825
पता : अमृतसर, पंजाब

जन्म तिथि : 8 फरवरी, 1983
जन्म समय : 12:13 दोपहर
जाति/गोत्र : सारस्वत ब्राह्मण/बतीश
कद : 5 फुट 4 इंच
शिक्षा : एम.ए., बी.एड. (सरकारी नौकरी, पटियाला)
फोन : 09501760645
पता : पटियाला, पंजाब

जन्म तिथि : 13 नवंबर 1993 (मांगलिक)
जन्म समय : 10:58 बजे प्रात:
कद : 5 फुट 4 इंच
जाति/गोत्र : कश्यप (धींवर)/तोमर
शिक्षा : एम.एस.सी. (जूलॉजी)
फोन : 09837164846, 09997074849, 05947-270730
पता : काशीपुर, जिला उधम सिंह नगर, उत्तराखंड

जन्म तिथि : 7 सितंबर 1989
जन्म समय : 10:30 बजे रात्रि
कद : 5 फुट 4 इंच
जाति/गोत्र : शर्मा/प्राशर
शिक्षा : बी.ए.
फोन : 09888928563
पता : मोहाली, पंजाब (केवल ब्राह्मण ही संपर्क करें)

जन्म तिथि : 9 सितंबर 1984 (आंशिक मांगलिक, विधवा)
जन्म समय : 6:00 बजे प्रात:
कद : 5 फुट 3 इंच
जाति/गोत्र : पंजाबी/सचदेवा
शिक्षा : एम.ए., बी.एड. (सरकारी लैक्चरर)
फोन : 08398956556, 01274-252353
पता : रेवाड़ी, हरियाणा (केवल पंजाबी संपर्क करें)

जन्म तिथि : 7 जून 1989
जन्म समय : 5:00 बजे प्रात:
कद : 5 फुट 3 इंच
जाति/गोत्र : राजपूत/भारद्वाज
शिक्षा : बी.ए.
फोन : 07508349001, 7973708103
पता : गुरदासपुर, पंजाब

वधु चाहिए

जन्म तिथि : 21 फरवरी 1986
जन्म समय : 11:00 प्रात: (आंशिक मांगलिक)
कद : 5 फुट 11 इंच
जाति/गोत्र : वडैरा/कौशल खत्री
शिक्षा : सी.ए.
व्यवसाय : अपना व्यवसाय
फोन : 09711670703
पता : पुष्प विहार, नई दिल्ली

जन्म तिथि : 24 मई 1985
जन्म समय : 12:45 दोपहर
कद : 5 फुट 4 इंच
जाति/गोत्र : भारद्वाज (ब्राह्मण)/कौशी
शिक्षा : 12वीं
व्यवसाय : नौकरी, बी.एस.ई.एस. में बिल डिस्ट्रीब्यूटर एवं मीटर रीडर
फोन : 09717328986, 09560168204
पता : शाहदरा, दिल्ली

जन्म तिथि : 9 अक्टूबर 1987
जन्म समय : 4:10 बजे सायं
कद : 5 फुट 10 इंच
जाति/गोत्र : हिंदू/सुलियान
शिक्षा : पी.जी.डी.सी.ए., 1 साल का डिप्लोमा (ग्रेजुएट)
व्यवसाय : मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी
फोन : 09266765046, 09990278705
पता : रानी बाग, दिल्ली (केवल दिल्ली वाले संपर्क करें)

जन्म तिथि : 6 दिसंबर 1988 (मांगलिक)
जन्म समय : 1:32 बजे दोपहर
कद : 5 फुट 6 इंच
जाति/गोत्र : कश्यप (धींवर)/तोमर
शिक्षा : बी.एस.सी., एम.ए., बी.एड. (सीटेट)
फोन : 09837164846, 09639627653, 05947-270730
पता : काशीपुर, जिला उधम सिंह नगर, उत्तराखंड

जन्म तिथि : 24 अक्टूबर, 1984
जन्म समय : 5:05 प्रात:
कद : 5 फुट 9 इंच
जाति/गोत्र : क्षत्रिय/नारायण
शिक्षा : बी.ई. (इलैक्ट्रोनिक्स) वर्थी, महाराष्ट्र में प्राइवेट कंपनी में जूनियर मैनेजर
फोन : 09714650884, 09527583451
पता : बलिया, उत्तर प्रदेश

जन्म तिथि : 21 दिसंबर, 1989
जन्म समय : 12:12 प्रात:
कद : 5 फुट 6 इंच
जाति/गोत्र : हिंदू/कौशल
शिक्षा : बी.टैक., कंप्यूटर साइंस (मोहाली में आई.टी. का बिजनेस)
फोन : 09464473291
पता : लुधियाना, पंजाब

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के मुख्य प्रकाशन

Divine Dimension Part 1

The End of Human Suffering

धर्म और मेडिकल साइंस
Religion and Medical Science

सद्गुरु वाणी

चमत्कार नहीं सत्य है

श्री गुरु गीता

मृत्यु से पहले मुक्ति

॥ मयख़ाना ॥
ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी

- परम पूज्य गुरुदेव द्वारा 12 वर्ष की आयु में रचित अद्भुत ग्रंथ
- भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत
- राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ

SHREE GURU GEETA

એક દિવ્ય રહસ્યમય મહાયોગીરાજ

New Records of Standards Existing in the World
Sage Par Excellence of The Era

How to Attain Liberation Before Death

एक दिव्य रहस्यमय महायोगीराज

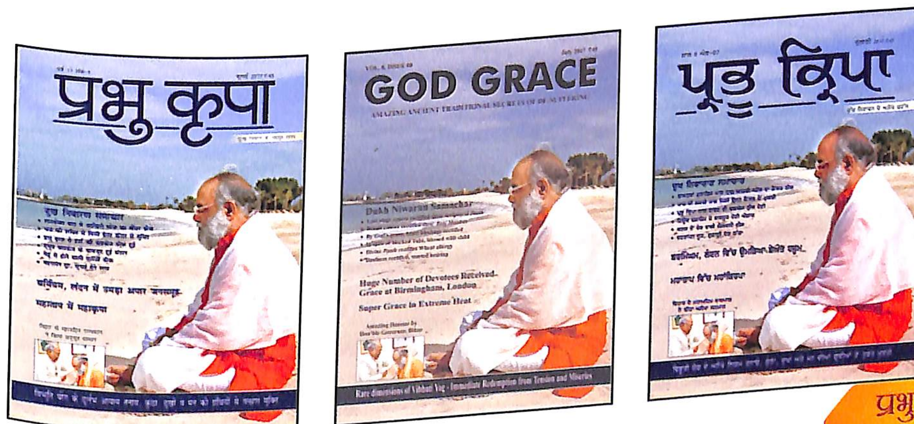
Experiencing Divinity

ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी के अद्भुत उत्तर

ਇਕ ਦਿਵਿਆ, ਰਹੱਸਮਈ ਮਹਾ ਯੋਗੀਰਾਜ

इस युग के अद्भुत संत

तीन भाषाओं में प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रभु कृपा



Posted at N.S. Mandi
Prescribed Dates
23rd & 24th (Advance Month)

DL(N)/209/2017-2019
RNI NO: DELBIL/2007/19924

"दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।"

ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी
(सद्गुरु वाणी से साभार)



भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम

5/120, संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

सी-27, ग्रेटर कैलाश एन्क्लेव-1, नई दिल्ली-110048
फोन नंबर 011-41639067-69, 46772250-54, 65577933-37,
26241880, 81, 83, 84, 85 फैक्स नंबर 91-11-26241882
E-mail : prabhukripa999@gmail.com, info@cosmicgrace.org
www.cosmicgrace.org, www.bslnd.org, www.bslndusa.info